आर एन आई नम्बर UPHIN/2017/74520

साहित्य सरोज

वर्ष-3 अंक -2 गहमर त्रैमासिक अप्रैल 2020 से जून 2020 मुल्य 30

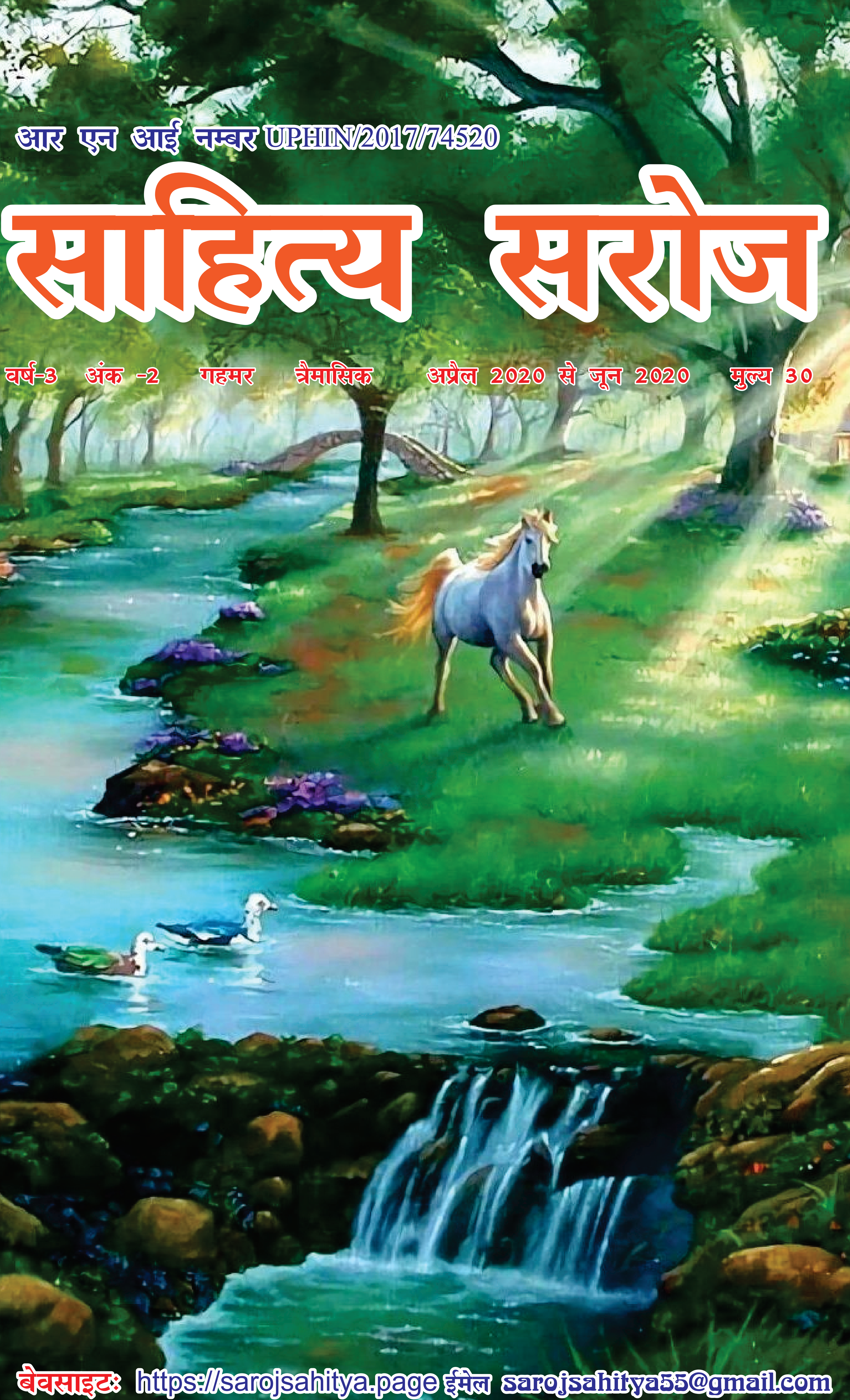

बेवसाइटः https://sarojsahitya.page ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-3 अंक -2

माह अप्रैल 2020 से जून 2020

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक -: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल
प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
संपादक -: डा० कमलेश द्विवेदी, दशरपुरवा कानपुर
सहायक संपादक -: डा० रमेश तिवारी दिल्ली
अध्यक्ष तकनीकी विभाग -: श्री राजीव यादव
प्रधान कार्यालय -: मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

प्रधान कार्यालय व्यवस्थापक :-
प्रशांत कुमार सिंह
ईमेल sarojsahitya55@gmail.com
9451647845

बेवसाइट-: https://sarojsahitya.page
मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर- साहित्य सरोज
प्रति अंक -30रूपये मात्र,

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयाँ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर
चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

हमें करें फालो टियूटर पर और सस्क्राइव करें हमारे यूटियूब चैनल साहित्य सरोज को अखंड गहमरी''

अनुक्रमाणिका

गंगा में गीता	ओम प्रकाश क्षत्रिय	02
फिर से	स्वाती चौहान	04
आशा-तृष्णा मर न जाये	कान्ति शुक्ला	05
पचास के बाद	आरती शर्मा	07
7 सिस्टर	अलका पांड़ेय	08
क्यों भाग रहे बच्चें	किरण बाला	10
एक चिड़िया	इंदु उपाध्याय	11
पढ़ने की डालो आदत-	डा. प्रभात पान्डेंय	12
किताबें	डा.स्वर्ण ज्योति	14
सपना	जयश्री शर्मा	14
किताबों के मेले	विवेक रंजन श्रीवास्तव	15
शहीद की ढेहरी	ज्योति शर्मा जयपुर	16
जबरदस्त और जबरदस्ती	डा.रामकुमार चतुर्वेदी	17
दिल ही तो है	सीमा रानी मिश्रा	18
वो बचपन की यादें	अनुभा वर्मा	19
नई शुरूआत	मीना सोनी	19
नारी और समाज	माधुरी भट्ट	20
हरियाणवी लोकगीत	सुरेन्द्र सैनी	21
बह-बेटी	आशा जाकड़	21
भ्रम में भारत	रेखा दुबे	23
मेरा गाँव	प्रतिभा स्मृति	25
कन्यादान	अनुप कुमार श्रीवास्तव	26
मोर मेहरारू	संतोष शर्मा साहिल	26
संस्कृत भाषा का महत्व	डा.नीतू शर्मा	27
कबाढ़	डा०ज्योति मिश्रा	32
बस लिखना है	प्रीति चौधरी मनोरमा	33
तुझे बचाने की कोशिश	रचना पंचपाल	33
अनुराधा	रेखा तिवारी	34
मेरे गॉव में	मेघा मिश्रा	34
हाय रब्बा मेरी पड़ोसन	प्रियंका गौड़	35
जन्मदिन	नीता चतुर्वेदी	35
आला वैदिक कर्मकाड़	डा.प्रिया सूफी	36
कद्र	मनोरमा जैन पाखी	41
आईये मणिपुर	निशा नंदिनी	42
रिश्तों का अतीत	विजय मिश्र दानिश	44
पीर में	आलोक प्रेमी	45
जरूरी है प्रेम	सुभाषचंदर	46
प्यासा की ग़जल	प्यासा अंजुम	47
चोट खाने	खुश्बु शर्मा	47
नाजुक है दिल	राजनारायण कैमी	47
न्योता	संतोष शर्मा शान	48

गंगा में गीता

आज भी गंगा का वह दृश्य मेरे आंखों के सामने आता है तो मैं सिहर उठता हूं। न जाने कहां से मुझ में वह शाक्ति आ गई थी, गीता को बचाना है. चाहे जो हो जाए दिलदिमाग व मन में यही चिंगारी सुलग रही थी. बस जम कर हाथ पकड़ लिया. गंगा के प्रवाह ने झटका दिया. गीता बह चली. मैं ने तुरंत लपका. हाथ पकड़ लिया. पैर वही की जंजीर में फंसा दिए. दोनों हाथों से गीता को पकड़ लिया. फिर खींचने लगा.आसपास के लोग किंकर्तव्यविमूढ़ से देख रहे थे. उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें ? शायद ! उन्हों ने इसी तरह यहां कई लोगों को बह कर मरते हुए देखा होगा. यह सब इतनी तीव्रता से हुआ कि कुछ समझ में नहीं आया. एक सैकण्ड की देरी बहुत कुछ अनर्थ कर सकती थी। यह क्षण जब भी याद आता है मैं कांप उठता हूं. यदि उस दिन जरा सी चूक या देरी हो जाती तो गीता बह जाती. तब मैं किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं होता. यह सोच कर आज भी घबरा जाता हूं.।जीवन में ऐसे अमूल्य और अविस्मरणीय क्षण भी आते हैं जब कोई शक्ति आप का साथ देती हैं. यह

बात 25 मार्च 2001 की बात है. जब माताजी 21 जनवरी 2001 को गौलोकवासी हो गई थी. पिताजी ठीक दो माह बाद यानी 21 मार्च 2001 को हमें छोड़ कर चले गए थे.यह संयोग ही कह लीजिए कि जिस तरह दोनों एक ही तारिख को धरती छोड़ कर गए उस दिनांक को दोनों की तिथि एक ही यानी बारस ही थी. ऐसा संयोग कभी कभी होता है। पिताजी के फूल यानी अस्थियां गंगा में प्रवाहित करना थीं. इसलिए हम पतिपत्नी और 6 वर्ष की पुत्री सहित हरिद्वार गए थे. यह उसी समय की घटना है. मगर, यहां घटनाओं का सिलसिला ही चला था. कहते हैं कि मुसीबत आती है तो एक साथ में आती है. ऐसा ही कुछ हमारे साथ हुआ।

हम बस से हरिद्वार पहुंचे थे. बस से उतरे तो बच्ची को भूख लग आई थी. बस स्टैण्ड पर होटलें देखी. एक गुमटी थी. सोचा कि गरीब ब्राह्मण की गुमटी है उसी पर कुछ खा लिया जाए. इस से अप्रत्यक्ष रूप से गरीब की मदद हो जाएगी. इसलिए उस गुमटी के पास गए.उस गुमटी पर लिखा था। दस रूपए की पाव पूड़ी. यह देख कर हम ने उस से कहा, ''भाई साहब'' ! ढाई सौ ग्राम पूड़ी दीजिएगा. ''उस ने पूड़ी दी. हम ने खाई. जब दस रूपए दिए तो वह बोला, भाई साहब। 120 रूपए दीजिए.यह सुन कर हम पति-पत्नी दोनों चौंक उठे, भाई साहब ! यहां क्या लिखा है ! जरा ध्यान से पढ़ लीजिए दस रूपए की पाव पूड़ी. हम ने पाव भर पूड़ी ही ली है. मैं ने चकित होते हुए कहा.यह सुन कर वह गरीब ब्रह्मण झुंझला कर बोला, पाव का मतलब जानते हो. उस ने चिढ़ कर हमें समझाया, पाव यानी मैदे की पूड़ी. यह दस रूपए की एक है. हम ने आप को 12 पूड़ी दी है. इस के हिसाब से 120 रूपए होते हैं।

यह सुनते ही हमें गुस्सा आ गया. हम ठगे जा चुके थे. मगर, बहुत माथा

फौड़ी करने के बाद भी हमें उसे सौ रूपए देना पड़े. कोई हमारी तरफ नहीं बोला. यहां से ठगे हुए हम एक आटो वाले के पास गए. वह बोला ,'' वहां जाने के 150 रूपए लगेंगे.।

यह सुन कर हमें दूसरा झटका लगा. यह हरिद्वार है या ठगोंद्वार. हमारे मुंह से निकला.हम सीधे एक पान वाले के पास गए. वहां से मीठी सुपारी ली. उस से पूछा, भाई ! हमें शांतिकुंज जाने के लिए क्या करना होगा ? तब उस ने बताया, आप उस बस में बैठ जाइए. वह पांच रूपए ले कर आप को वहां उतार देगा।इस तरह हम शांतिकुंज पहुंच गए. भूख जोर की लगी थी. पहले ठगे जा चुके थे. शांतिकुंज के कैंटीन में गए. वहां सात रूपए की पाव पूड़ी लिखी हुई थी.।

दूध का जला छाछ फूंक फूंक कर पीता है. इसलिए हम ने कांउटर पर सात रूपए दिए. रसीद ली. पाव पूड़ी ली. देखा दस पूड़ी थी. खाई. फिर दोबारा पाव पूड़ी ली. खाई. लगा कि हम वाकई हरिद्वार में आए हैं.पंडे पुरोहित की यह ठगी हमें जिंदगी भर याद रहेगी। यह सोच कर हम वही रात रूकें. मगर, रात को दो बजे पत्नी उठ बैठी. उस के पेट में बहुत दर्द था. हम बहुत घबराए. रात को किस को बुलाए. हिम्मत कर के बाहर निकले. इधर उधर देख कर आगे बढ़े. एक जगह लिखा था आपातकाल में द्वार के पास वाली जगह पर संपर्क करें.।

डरते डरते वहां पहुंचें. एक व्यक्ति सोया हुआ था.उसे उठाया. उस ने भली भांति पूछ परख कर हम से हालचाल जाना. तब हमें कुछ गोली दी. वह ले कर हम अपने आवास पर आ गए. पत्नी को दी. वह दो घंटे बाद आराम कर के सो गई. यह हरिद्वार की रात बड़ी मुश्किल से कटी. सुबह चार बज उठ कर पिंडदान किया. पत्नी की इच्छा थी कि गंगाजी के दर्शन करें. यहां आए है.गंगा स्नान न करे तो उद्वार नहीं होता है.।मैं ने समझाया, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है. कमजोरी है. गंगा स्नान बाद में कर लेना. मगर, पत्नी नहीं मानी. बोली, नहीं जी ! आज ही पिताजी का पिण्डदान किया है इसलिए नहाना जरूरी है.।

वह मेरे लाख समझाने पर नहीं मानी. मैं उसे ले कर गंगा के किनारे चला आया. पुत्री को एक चादर पर बैठा दिया. वहीं आवश्यक कपड़े उतार कर रख दिए. फिर पत्नी को कहा, मेरे साथ संभल कर आना.।तभी पास खड़े सज्जन बोले, भाई साहब ! संभल कर डूबकी लगाना. आज बहाव बहुत ज्यादा तेज है. यहां से कई लोग बह गए हैं। उन सज्जन ने हमें चेताया।

तब मैं ने पत्नी से कहा, लोटा गिलास ले लो. उसे से शरीर पर पानी डाल कर स्नान कर लेना.मगर, पत्नी का कहना था, पिण्डदान के बाद गंगा में डूबकी लगाना जरूरी है.। कह कर मेरे निर्णय को खारिज कर दिया.भला मैं क्या जवाब देता. पत्नी की बात मान ली. उस का हाथ पकड़ लिया. वह जैसे ही पानी में उतरी. सीढ़ियों पर काई जमीं हुई थी. पैर के नीचे काई आ गई. वह बहाव के झटके से फिसली. उस का हाथ झटके के साथ छूट गया।

वह तेज बहाव में बही. न जाने मुझे

क्या सूझा. गीता को बचाना है. यह अचानक दिमाग में कौंध गया. मैं तुरंत उछल कर कूदा. सीधा गीता के पास गया. तेजी से उस का हाथ पकड़ लिया. पैर अचानक जंजीर के पास चला गया था। उस से जंजीर में पैर की आटी लगा दी. यह सब इतने जल्दी हुआ कि मुझे ही पता नहीं चला कि क्या हो रहा है ?

मेरा हाथ गीता के हाथ में था. वह तेज बहाव में पानी पर लहरा रही थी. कोई शक्ति उसे पानी में खींच रही थी. मैं ने पूरी शक्ति लगा कर गीता को खींचा.बस, सोच लिया था जो भी हो, पत्नी को बचाना है. चाहे इस के लिए मुझे ही बह कर क्यों न पानी में जाना पड़े. इतनी हिम्मत न जाने कहां से आ गई थी. अचानक दूसरा पैर आगे वाले खंबे की ओर किया. उस पर जोर देते हुए गीता का खींचा।वह झट से मेरी ओर आई. मैं चींख पड़ा,'' गीता ! इसे पकड़ लो. ''गीता घबराई हुई थी. उस ने झट से जंजीर पकड़ ली।बस, यही क्षण था, वह संहल गई. तब तक कुछ लोग दौड़ कर आ गए. गीता को पकड़ कर बाहर निकाल लिया. मेरी जान में जान आ गई. जैसे ही मैं बाहर निकला, एक भाई साहब दिल थामें यह मंजर देख रहे थे.वे बोले, भाई साहब ! आप किस्मत वाले है. आप की पत्नी बच गई. अन्यथा, पानी में बह जाने के बाद आज दिन तक यहां से कोई जिंदा नहीं बचा है.।

यह सुनते ही मैं और मेरी पत्नी आवाक रह गए. दोनों एक दूसरे को देखते रहे. जैसे दोनों को नवजीवन मिला हो. कई घंटे वैसे ही निर्जीव से बैठे रहे. तब अचानक गंगा को प्रणाम कर के उठ बैठे. फिर चुपचाप उठ कर अपने आवास की ओर पर चल दिए.आज जब भी उस घटना को याद करता हूं कांप उठता हूं. यदि उस समय मेरी पत्नी बह जाती तो मैं किसकिस को क्याक्या जवाब देता ? क्यों कि मैं ने प्रेम विवाह किया था. इसलिए मुझ पर कोई भी, कुछ भी आरोप लगा सकता था.

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'
अध्यापक, पोस्ट आफिस के पास
रतनगढ–जिला–नीमच (मप्र)
मोबाइल नंबर–9424079675

फिर से!

कंक्रीट का फैला, कैसा जंगल?
पेड़ पौधों से बना था जंगल।
छायादार, फलदार फूलों से जो लदे थे पेड़,
न जाने किसकी नजर को चढ़ गये?
कुल्हाडी, आरी न जाने किन-किन औजारों से
दर्द पहुंचाया इन पेड़ो को।
दर्द न जाना इस हरियाली का,
कुचलने लगा मानव किस प्रकार।
मानव ने ऐसी ठानी है,
कंक्रीट का महल सजाने की,
ऐ,मानव थाम ले अपनी नादानी,
पेड़ न होगे जीवन में गर,
तो सांस कैसे ले पाओगे।
अपने स्वार्थ के लिए क्या तुम,
धरती माता को चोट पहुचाओगे।
शपथ लो तुम आज ये सब,
एक पेड़ लगाएँगे फिर से
धरती माता को हरा-भरा बनाएँगे।
खुश होगी ये धरती माता,
लहराऐगे फिर से जंगल ।

स्वाती चौहान देहरादून

आशा - तृष्णा न मर

सुरमई सांझ। उस पर सितम यह कि अकेलेपन की त्रासदी झेलता कमजोर बूढ़ा तन। बच्चे बड़े क्या हुए, सबके पर निकल आये। जो बिना पूछे पग नहीं धरते थे ,वही ऐसे आजाद हुए कि सारी मोह ममता छोड़ अपनी घर- गृहस्थी रम गए। दोनों बेटों में से किसी एक ने भी झूठे मुँह से नहीं कहा कि हमारे साथ चलो ,यहाँ अकेले कैसे रहोगे अब अकेली जानद्य पत्नी का देहांत तो पहले ही हो गया था। कैसे मर-खप कर बेटों को काबिल बनाया कि दिन फिरेंगे पर किस्मत में तो अकेला ही रहना बदा था। चलो ठीक ही है ,बच्चे खुश तो हम खुश पर मन के किसी कोने में बच्चों के साथ रहने नाती दूपोतों के साथ खेलने की ललक थी ,एक साध थी।सारे अरमान धरे रह गए।शर्मा जी ने एक गहरी सांस ली।आज महरी भी काम पर नहीं आई। जूठे बरतन भिनक रहें हैं।भूख सही नहीं गई तो ब्रेड-दूध खाकर बिस्तर पर पड़ रहे। आखिर कब तक पेपर पढ़ें। दिन काटे नहीं कटते।ज्यादा टीवी भी नहीं देख सकते ,सर दुखता है। आँखे धुंधली हो चलीं।चश्मे का नम्बर बढ़ गया . कौन टेस्ट कराये।जब पत्नी और बच्चे थे दूघर कितना भरा-भरा था।अब सूनापन काटने को दौड़ता है।

उन्हें पत्नी के सानिध्य का एक-एक पल शिद्दत से याद है।उसका समय से चाय -नाश्ता ,खाने -पीने ,दवा आदि का प्रबंध करना। तौलिये-कपड़े इधर-उधर फेंकने पर लापरवाही का आरोप लगाकर झिड़कना। मजाल जो कभी गफलत हो जाए। सुगढ़ ऐसी कि जो काम करती सुरुचिपूर्वक , बड़े सलीके से। सुंदर ऐसी कि छूने से मैली होने का डर। खाना ऐसा पकाए कि पेट भर जाए पर नीयत न भरे। अफसोस कि बीच मंझधार में दगा दे गई,उनके टूटे मन,कमजोर तन और झुके कन्धों पर दो बच्चों का भार छोड़ कर। जैसे-तैसे बच्चों का मुँह देखकर अपने को संभाला और इस गुरुतर उतरदायित्व को बखूबी निभाया। पर किसने उनके त्याग को समझा।बेटे-बहुओं का मन तो इस मकान को बेचकर पैसे खड़े करने का था पर ऐन मौके पर बचपन के साथी श्रीवास्तव ने सलाह दी और वे कड़ा रुख कर गए गए और स्पष्ट शब्दों में इनकार कर कि जब तक जिन्दा है घर बेचने के विषय में कोई बात नहीं होगी। भला हो श्रीवास्तव का जिसने उनके दिमाग में अच्छे से यह बात बिठा दी थी कि मकान बेचने की भूल कभी मत करना वर्ना अपने हाथ कटा बैठोगे। बच्चे तो बंदरबांट कर लेंगे और तुम पूर्णरूपेण उन पर आश्रित हो जाओगे सो कालान्तर में भार बन जाओगे।हो सकता है रोटी तक के लिए तरस जाओ श्रवण कुमारों का जमाना नहीं रहा अब। हो सकता है तीर्थयात्रा की जगह वृद्धाश्रम पहुंचा दिए जाओ। कमोवेश हर घर का यही हाल है अब। बात भी सही थी। उन्हें याद आया दृ एक बार बड़े बेटे के यहाँ बहुत मन से गए थे पर बहु चार-छै दिन में ही उक्ता गई , बेटे से लड़ना शुरू कर दिया कि ये तो डेरा जमा कर बैठ गए ,बड़ा डिस्टर्ब हो रहा है। वह बड़े दुखी मन से लौटे थे पर करें क्या अकेले मन भी तो नहीं लगता।

कल की ही बात हो ऐसा लगता है। जब पत्नी ने कहा था दृ जो भी अपने पास है बराबर - बराबर बेटों में बाँट देना चाहिए ,अपने जिन्दा रहते।उन्होने चौंक कर पत्नी की तरफ देखा था। बोले एकाएक यह बात तुम्हारे दिमाग में कैसे आई। पत्नी कुछ सकुचाते हुए बोली थी, अपने पड़ोस में जो पाठक परिवार रहता है , उनके यहाँ बंटबारा चल रहा है। पाठक जी की पत्नी के दिवंगत होते ही बेटे बहुओं में झगड़ा शुरू हो गया। हम आस-पास की लेडीज भी इकठ्ठी हुईं थीं। एक-एक कटोरी गिलास के साइज तक के लिए लड़ाई हो रही थीद्य बड़ी को थोड़े बड़े साइज के कटोरे क्या मिल गए छोटी बहुएं बिफर गईं। तीनों बेटे कुत्ते बिल्लियों की तरह लड़ रहे थे।मिसेज पाठक के गहने सुनार से तुलवा कर बांटे जा रहे थे। जब करधनी की बारी आई तो पाठक जी ने कमजोर स्वर में प्रतिरोध भी किया कि इसे न तोड़ो तुम्हारी माँ ने बड़े मन से बनवाई थी , कोई एक बहू निशानी के तौर पर रख ले और दूसरी बहुएं उसी के वजन बराबर दूसरीं चीजें लेले पर भला बहुएं मानने वालीं थीं। आखिर करधनी के तीन टुकड़े किये गए और पाठक जी असहाय से देखते रह गए। फिर पाठक जी को साथ रखने की बारी आई। तय हुआ चार-चार महीने तीनों बेटे बारी-बारी से रखेंगे तो मंझली बहू मुँह चढ़ा के बोली साल में पुरुषोत्तम माह भी तो आता है, तब कौन रखेगा ,अभी ही निश्चित कर लो। सब सुनकर दंग रह गए। जिन बच्चों के ऊपर खून की एक-एक बूँद न्योछाबर कर दी जाती है , वे बुढ़ापे में ऐसी दुर्दशा करेंगे,

कभी कल्पना भी नहीं करते माँ-बाप। -अब और दूर क्यों जाते हो अपने से चौथे घर वाले सौनकिया जी को ही देखो।

पत्नी की मृत्यु के बाद क्या दशा हो गई उनकी। बेचारों को लकवा मार गया है। इकलौती बहू है , उन्हें खाने को नहीं देती कि खायेंगे तो हाजत को जायेंगे , फिर उसे ही धुलाना पड़ेगा और जब ऐसा मौका आता है खीज कर मग से उन्हें मारती है ,बेचारे रोकर रह जाते हैं। बेटा नौकरी पर चला जाता है फिर बहू का राज्य। कैसे- कैसे परेशान करती है उन्हें। प्रताड़ित करने के रोज-रोज नए तरीके। दिन-रात का कोसना और गालियां सुनते वे ईश्वर से मृत्यु की कामना करते हैं पर ईश्वर ने भी उनकी तरफ से लगता आँखें फेर लीं हैं शायद । हर घर में यही हाल। लाखों में एक सपूत निकल आये तो बड़ा भाग्य।

शर्मा जी सोच में पड़ गए थे। पत्नी का कहना है तो बिल्कुल सही। यद्यपि आज बेटे आज्ञाकारी हैं , अनुशासित हैं पर कल किसने देखा है। पता नहीं पति पत्नी में से कौन पहले जाए। अगर पहले उनकी मृत्यु तो पत्नी बेमौत मर जायेगी और यदि पत्नी पहले चली गई तो वे क्या करेंगे सोचते ही दहशत होती थी। फिर भी उन्हें पत्नी की सलाह उचित लगी और जो भी दोनों के पास था , बेटों में बराबर-बराबर बांट दिया सिर्फ मकान को छोड़ कर जो उनकी मृत्यु के उपरांत ही बेटों को मिल सकेगा। खुद के गुजारे के लिए पेंशन पर्याप्त। बेटे असंतुष्ट थे, रहे आयें उन्हें फुर्सत मिली। पर चैन कहाँ ? पत्नी चली गई , वे अकेले रह गए भोगने के लिए। एक-एक बात याद आती है उसकी जीवन भर पत्नी से सीधे मुँह बात नहीं की , हमेशा उखड़े से रहे पर अब जब वो चली गई तो उसी की यादों में निमग्न रहने की आदत हो गई है मानो।

शर्मा जी स्वंय में खोये अन्यमनस्क से लेटे थे कि उनके मित्र श्रीवास्तव जी ने आवाज दी, क्या शाम के समय घर में घुसे हो? चलो घूम के आते हैं कहीं। श्रीवास्तव जी अपने बेटे के घर से लौटे थे। शर्मा जी ने पूछा कि कैसा रहा तुम्हारा बेटे के यहाँ जाना , खूब मजे किये होंगे ? हाँ यार मजे ही मजे हैं। बेटे- बहू को अपनी नौकरी से फुर्सत नहीं , घर नौकरों के हवाले। बच्चे अपने में व्यस्त। उन्हें हम ओल्ड फैशन लगते हैं। हाँ खाने-पीने की कोई कमी नहीं ,खाए जाओ नौकर के हाथ का बना। बेटे-बहू ने तो दो घड़ी बैठकर सुख-दुःख भी नहीं पूछा। अपना तो मन नहीं लगा सो वापस चले आये। चलो इतना ही बहुत है , मेरे बेटे तो बुलाते ही नहीं, मकान नहीं बेचा इसलिए नाराज हैं। शर्मा जी खिन्नता से बोले। उनका मूड भांप कर श्रीवास्तव जी ने बात पलट दी , बोले कुछ पता है अपना दोस्त वर्मा आजकल बीमार है ? चलो उसे देख आते हैं। ठीक है कहकर वे चुपचाप चल दिए। वर्मा के यहाँ पहुँच कर दोनों चकित रह गए। बाहर के आउटहाउस में वर्मा अकेले पड़े थे। आसपास कोई नहीं। मुँह पर मक्खियाँ। दशा इतनी दयनीय कि मक्खियाँ उड़ाने का भी होश नहीं। श्रीवास्तव जी की आवाज सुनकर वर्मा ने धीरे से आखें खोली। तुम यहाँ क्यों पड़े हो, बेचारे से बोला भी नहीं गया। छूकर देखा तो उन्हें तेज बुखार था।

दोनों सोच में पड़ गए। वर्मा ने तो फिर निढाल होकर आँखें मूँद लीं थीं। श्रीवास्तव ने घंटी बजाई , आवाज लगाईं पर वर्मा जी के घर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मजबूर होकर श्रीवास्तव आटो लाये और उन्हें हास्पिटल ले चले दोनों। हास्पिटल में पहले तो दो-चार खरी खोटी डाक्टर द्वारा सुनने को मिली कि मुर्दे को भर्ती कराने चले आये। बड़े अनुरोध पश्चात वर्मा को भर्ती किया गया और इलाज शुरू हुआ। रात भर दोनों भूखे-प्यासे वर्मा जी के सिरहाने बैठे रहे। सुबह जब उन्होंने आँखें खोली ,तब दोनों की जान में जान आई। उनके बेटे को फोन किया , वह टूर पर गया था ,बहू ने आने में असमर्थता जताई , उसकी भी कोई अति आवश्यक मीटिंग थी। अब कोई उपाय शेष न रहा तो दोनों मित्रों ने बारी दूबारी से रहना तय किया दृ जब तक वर्मा जी स्वस्थ न हो जाएँ। बेटे-बहू को उनके नहीं आना था , तो नहीं आये। हास्पिटल का पेमेंट भी दोनों ने मिलकर किया। जब वर्मा जी को लेकर उनके घर पहुंचे घर पर ताला लगा मिला। खीज गए दोनों। ऐसा बेटा किस काम का जो बीमार बाप की खोज-खबर ही न ले। अब कहाँ ले जाएँ ,बीमार आदमी का थ्य अपथ्य, सेवा- सुश्रूषा आसान है क्या ? आखिर शर्मा जी बोले दृ हमारे घर ही ले चलो , वहीं सोचेंगे कि क्या किया जाए। शर्मा जी के घर जब तीनों यार बैठे तो कहने को शब्द नहीं। तीनों ही जैसे अपने आप में शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे। शर्मा जी ने ही मौन तोड़ा दृ मैं चाय बनाकर लाता हूँ। बेचारे किचन में चाय बनाने में जुट गए। इधर-उधर जूठे बरतन थे। खैर जैसे तैसे चाय निबटी।

अब अगली रणनीति क्या हो ,इस पर विचार-विमर्श चलने लगा। श्रीवास्तव जी बोले दृइस तरह

से तो काम नहीं चलेगा। बाल-बच्चे तो अपनी तरफ से एकदम लापरवाह हो गए हैं। हम कब मरें , इसी का इन्तजार है उन्हें पर उनके सोचने से तो हम मर नहीं जायेंगे। पता नहीं कब तक जीना है हमें निठल्ले बैठे रहकर घरवालों को कोसते रहने से अच्छा है कि समय काटने के लिए कुछ सार्थक करने का सोचा जाये। अपना मन भी लगा रहेगा और हाथ- पाँव भी चलते रहेगे। बात तो ठीक है तुम्हारी ,शर्मा बोले पर इस बुढापे में हम क्या करने लायक बचे हैं , जिन्दगी भर नौकरी की है। अब आराम के दिन हैं फिर शरीर भी अशक्त है। हाँ पर कुछ ऐसा कर सकते हैं जिसमें शारीरिक श्रम कम हो , उतना ही करेंगे जितना अपने वश में हो , पर क्या समझ नहीं आता। श्रीवास्तव बोले तब सुनो यार हमारे घर के पास एक नया इंजीनियरिंग कहलेज खुला है , वहां बाहर से आये बच्चे खाने के लिए बहुत परेशान होते हैं। हम अगर उनके लिए मैस या टिफिन की कोई व्यवस्था कर सकें तो बहुत बढ़िया रहेगा। हूँ विकल्प तो एकदम सही है , शर्मा जी ने कहा और खाना बनाने की भी कोई समस्या नहीं , हमारी काम वाली महरी की ननद को उसके घरवाले ने छोड़ दिया है ,वह काम ढूंढ रही है। तब तो बन गया अपना भी काम। सामान की लिस्ट बनाओ और तीनों मिलकर पैसा लगाएं। सप्ताह में एक बार किराना लाना होगा तो वह हम आराम से कर सकते हैं , आजकल तो घर पर भी सामान आसानी से सप्लाई हो जाता है। हम रोज टहलने जाते ही हैं , लौटते वक्त सब्जियाँ खरीद कर ला सकते हैं। कोई उद्देश्य रहेगा तो व्यस्त रहेंगे और मन भी लगा रहेगा।

तो फिर यही तय रहा। तीनों मित्रों के चेहरों पर उत्साह और आत्मसंतोष की आभा थी। अब न उन्हें बेटे-बहुओं से शिकायत थी और न ही नए जमाने के बदलाव से कुढ़न। मन शांत और निर्विषय। तीनों आपस में सर जोड़कर भविष्य के सुनहरे सपने बुनते हुए मनोयोग से मंत्रणा में जुट गए।

कान्ति शुक्ला
भोपाल मध्यप्रदेश
प्रधान संपादक साहित्य सरोज

पचास के बाद

ये जो उम्र है
ना पचास की,
मुश्किल तो है पर लाजवाब भी,
वो छोटों की सलाहें,
और बड़ों की सीखे,
पिसती तो है पचास की,
न मानो तो छोटे नाराज
ना चलो तो बड़े नाराज,
मुश्किल तो है पर लाजवाब भी,
ना बचपना जा रहा,
न बुढ़ापा आ रहा,
बड़े कह रहे बच्चे हो अभी,
ऐसे कैसे थक रहे,
बच्चे कहते बूढ़े हो,
ऐसे कैसे दौड़ रहे ,
मुश्किल तो है पर लाजवाब भी,
ये जो तजुर्बा है
ना पचास का,
बड़ा नटखट सा है ,
चले थे देने बड़ों को सलाह,
जवाब मिला धूप में पके
तो हैं पर पूरे नहीं ,
जो देने चले छोटों को तो उन्हें
तो इनकी जरूरत ही नहीं,
ना इधर के है
ना उधर के हैं ,
अभी तो बस पचास के हैं।

आरती शर्मा देहरादून

7 सिस्टर

सेवन सिस्टर्स पूर्वोत्तर भारत के सात आपस में सटे हुए राज्य हैं देश का सात प्रतिशत हिस्सा बनाते है। ये राज्य हैं अरुणाचल प्रदेशय असमय मेघालयय मणिपुर, मिजोरमय नागालैंड और त्रिपुरा हालंकि इन राज्यों के संस्कृति और सम्पदा एक दूसरे से बिलकुल अलग हैं लेकिन राजनैतिकय समाजिक और आर्थिक तौर पर ये सभी एक ही प्रकार के हैं। 7 सिस्टर के नाम से पहचाने जाने वाले इन राज्यों एवं इन राज्यों की राजधानीयां निम्न हैं।

अरुणाचल प्रदेश - ईटानगर
असम - दिसपुर
मणिपुर - इम्फाल
मेघालय - शिलोंग
मिजोरम - ऐजवाल
नागालैंड - कोहिमा
त्रिपुरा - अगरतला

क्या कहता है इतिहास

1947 में जब भारत ब्रिटिश राज्य से मुक्त हुआ तो देश के पूर्वोत्तर में तीन ही बड़े राज्य थे।मणिपुर, त्रिपुरा और असम जिसकी राजधानी शिलोंग थी जो अब मेघालय की राजधानी है। बाद में इन्ही राज्यों से 4 राज्य और बने।

1963 में नागालैंड उसके बाद 1972 में मेघालय व उसी वर्ष 1972 में मिजोरम यूनियन टेरिटरी बना और अंत में 1987 में अरुणाचल प्रदेश को प्रदेश का दर्जा मिला। इन राज्यों में बोडोय निशिय गारोय नागा और भूटिया के अलावा भी कई जन जातियां है।

नार्थ ईस्ट के ये सात राज्य पूरी दुनिया में अपनी प्राकृतिक सम्पदा के लिए मशहूर हैं। प्राकृतिक संपदा तथा सांस्कृतिक वैभव का जैसा असीम भंडार यहाँ बिखरा पड़ा है, वैसा देश में ही नहीं, शायद पूरी दुनिया में अन्यत्र दुर्लभ हैं। यहां विभिन्न कुलों की अनगिनत भाषाएँ, अनगिनत लोग तथा अनगिनत संस्कृतियं, ऐसा बहुरंगी रचना रचती हैं कि देखने समझने वाला मोहित रह जाता है।

इस छोटे से क्षेत्र में 220 से अधिक नस्लों के लोग निवास करते हैं,और जितनी नस्ल, उतनी भाषाएँ और उतनी ही संस्कृतियां। प्रकृति ने तो मानो अपना पूरा खजाना ही यहं, बिखेर दिया हो। अकेले इस क्षेत्र में ५१ प्रकार के वन और असंख्य प्रकार की पादप जातियां हैं।

उत्तर पूर्वी भारत हमारे देश का एक ऐसा हिस्सा है जिसके बारे जितना बताया जाये उतना ही कम है. चारो तरफ हरियाली से घिरा हुआ नार्थ इस्ट दिखने में जितना खूबसूरत है उससे भी ज्यादा खूबसूरत है वहां के लोग. यहाँ मैं सिर्फ बाहरी खूबसूरती की बात नहीं कर रही हँ। बाहर से तो खूबसूरत होते ही है लेकिन अंदर से भी खूबसूरत और सहायक होते है. साथ ही साथ व्यापार के दिक से भी नार्थ इस्ट भारत का एक महत्वपूर्ण भाग है. चाय , तो आप पीते ही होंगे और आप को पता भी होगा ज्तदतार चाय उत्तर पूर्वी भारत से ही जाते है। ऐसे ही बहुत सारे रोचक तत्व है जिसके बारे जान कर आप भी एक बार के लिए सही नार्थ इस्ट में जरूर जाना चाहेंगे।

आज मै आप को उत्तर पूर्वी भारत के कुछ दृश्य के बारे में बता देती हूँ कई साल पहले में गोहाटी शिलांग , चेरापूंजी, कांचीजंघा आदि घुम कर आई हूँ बहुत सुंदर है देखने लायक।

उत्तर पूर्वी भारत के नब्बे प्रतिशत सीमाएं चीन, म्यांमार, भूटान और बांग्लादेश के साथ शेयर करते है। दुनिया के लगभग 70 प्रतिसत किंड्स भारत के उत्तर पूर्वी राज्यनार्थ इस्ट में पायी जाती है। नार्थ इस्ट में बहने वाली नदी ब्रह्मपुत्र भारत का एकमात्र ऐसा नदी है जो तीन देशों भारत, चीन व बांग्लादेश से गुजरती है।

-:भारत की उत्तर पूर्वी राज्यों में लगभग 220 भाषाएँ बोली जाती है।

-: 200 सालो तक मुगल साम्राज्य ने भारत पर शासन किया था लेकिन उत्तर पूर्वी भारत, भारत का एकमात्र ऐसा हिस्सा था जहां पर मुघौले ने अपने शासनकाल के दौरान कब्जा नहीं किया था।

-:ढोला सादिया ब्रिज जिसे भूपेन हजारिका सेतु के नाम से भी जाना जाता है वो असम और अरुणाचल प्रदेश को जोड़ने वाला भारत का सबसे लम्बा सेतु है।

-: दुनिया की सबसे बड़ी नदी द्वीप माजुली और दुनिया का सबसे छोटा नदी द्वीप उमानंद दोनों ही असम में स्थित है।

-:मिजोरम और त्रिपुरा भारत में उच्चतम साक्षरता दर वाले राज्यों में से हैं।

-:600 साल तक उत्तर पूर्वी भारत पर शासन करने वाले अहोम वंश भारतीय इतिहास के सबसे लम्बे समय तक अटूट रहने वाला राजवंश थे।

-:उत्तर पूर्वी भारत के लगभग 70: क्षेत्र पहाड़ियों से घिरा हुआ है जो की पर्यटकों के लिए बहुत की खूबसूरत स्थान है।

-: असम में सुअलकुचि दुनिया की सबसे बड़ी बुनाई करनेवाली गांव में से एक है जहां की पूरी आबादी रेशम वस्त्रों की बुनाई में लगी हुई है।

-:असम में डिगबोई तेल शोधनागार एशिया का सबसे और सहायक होते है. साथ ही साथ व्यापार के दिक से भी नार्थ इस्ट भारत का एक महत्वपूर्ण भाग है।

-:उत्तर पूर्वी भारत को सबसे स्वच्छ क्षेत्र में से एक माना जाता है. मेघालय के एक गांव पूरे एशिया में सबसे स्वच्छ गांव है

प्रसिद्ध) एक सींग वाले राइनो विशेष रूप से भारत के उत्तरपूर्व भाग में पाए जाते हैं।

-:काजीरंगा और मानस समेत भारत के 7 प्रमुख नेशनल पार्क नार्थ इस्ट में हैं।

-:नार्थ ईस्ट भारत के सबसे बड़े चाय उत्पादन का स्थान है.

-: दुनिया में सबसे ज्यादा बारिश होने वाले स्थान मौसिनराम नाम का एक गांव है जो कि मेघालय में स्थित है..

-:मुगा, The Golden Silk of Assam दुनिया में कहीं और पैदा नहीं होता है।

-: उत्तर पूर्व तिब्बती, दक्षिणपूर्व एशिया और पूर्वी भारतीय संस्कृत का एक मिश्रण है। शिलांग को 'भारत की रंक कैपिटल' कहा जाता है। पूरे पूर्वोत्तर भारत में कोई दहेज संस्कृति नहीं है।

-:सिक्किम भारत का पहला एक जैविक राज्य है।ईगल नेस्ट वन्यजीव अभयारण्य दुर्लभ पक्षियों के लिए घर है।

डा अलका पाण्डेय मुम्बई

क्यों भाग रहे हैं बच्चे भोजन से

किसी भी व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास उसके द्वारा ग्रहण किये आहार पर निर्भर करता हैद्य कहा भी गया है,"जैसा खाओ अन्न , वैसा होए मन" आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो बच्चों में खान -पान के बदलाव के कारण पौष्टिक आहार के प्रति अरूचि उत्पन्न होती जा रही है जो कि एक चिन्ता का विषय हैद्य खान-पान की मिश्रित संस्कृति के चलते उसमें बदलाव आना एक सामान्य बात हैद्य कहीं न कहीं यही बदलाव बच्चों में भोजन के प्रति उदासीनता का कारण बनता जा रहा है।

बच्चों में खान -पान की आदत शैशवकाल से ही विकसित होती हैं द्यबच्चों को 2-6 वर्षो के मध्य जो कुछ भी खिलाया जाता है उसका स्वाद उन्हें जीवन भर नहीं भूलता द्य यही वो अवस्था है जहाँ से बच्चे में स्वाद विकसित होता है । बच्चा भोजन के रंग, रूप और स्वाद के प्रति जल्दी ही आकर्षित हो जाता है द्यकोई भी भोजन यदि आकर्षक रूप में परोसा जाए तो वह उसे रूचि से खा लेता है । एक ही चीज से जल्दी उकता जाना बच्चे की स्वाभाविक प्रकिया है इसीलिए वह बार-बार नए कपड़े, खिलौने और भोजन की माँग करता है।

भोजन में विविधता की कमी, बच्चे को बार -बार एक ही चीज को खिलाना, पेट भर जाने के उपरांत अधिक भोजन करने को तत्पर करना, बच्चों को किसी भी कार्य पूर्ति हेतु च,कलेट, पिज्जा, बर्गर, पेस्ट्री आदि जंक फूड का लालच देना,उसकी मनःस्थिति समझे बिना ही डाँट-डपट कर भोजन कराना आदि बहुत से ऐसे कारण हैं जिससे बच्चों में भोजन के प्रति उदासीनता का भाव उत्पन्न होता है द्यआज के इस भाग-दौड़ से परिपूर्ण जीवन में समय की व्यस्तता के कारण हम बच्चों को झटपट तैयार हो जाने वाले व्यंजन खिलाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। भूख लगने पर बच्चों को चिप्स, बिस्कुट, पेस्ट्री पकड़ना या फिर 2 मिनट्स नूडल्स बना कर दे देना, बच्चों को बाजार से चीजें खरीदने के लिए पैसे देना हमारी दिनचर्या में इस तरह समा गए हैं कि हम ये जान ही नहीं पाते कि हम स्वयं ही बच्चों की पौष्टिक भोजन के प्रति उदासीनता का कारण बनते जा रहे हैं बच्चा कम से कम कुछ तो खा रहा है, भूखा तो नहीं है यह सोच भी बच्चे के लिये घातक सिद्ध होती है। जब तक हमें इस बात का अहसास होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।खान-पान की मिश्रित संस्कृति के चलते हमें विभिन्न प्रांत के भोजन एक ही जगह पर उपलब्ध हो जाते हैं युवावस्था की दहलीज पर कदम रखते ही बच्चों के मन में नए व्यंजनों के प्रति उत्सुकता बढ जाती है । रेस्तरां में जाकर विभिन्न देशों के व्यंजन, अपौष्टिक जंक फूड के प्रति बढती लालसा एक स्टेट्स सिम्बल बन कर रह गया है जो कि स्थानीय भोजन के प्रति उदासीनता का मुख्य कारण बनता जा रहा है।

अब प्रश्न ये उठता है कि इसके लिए जिम्मेवार कौन है? बच्चा स्वयं, अभिभावक, समाज, हमारी मानसिकता, आलस्य या फिर जागरूकता का अभाव? कहीं न कहीं किसी हद तक ये सभी इसके उत्तरदायी हैं और सबसे अधिक अविभावक जो जाने अनजाने ही ऐसी गलतियाँ कर जाते हैं जिसका परिणाम उन्हें स्वयमेव भुगतना पड़ता है।

बच्चों में पौष्टिकता का अभाव जहाँ विभिन्न रोगों का कारण बनता है वहीं मानसिक दुर्बलता का भी । यदि बच्चों में समय रहते खान-पान की सही आदत नहीं डाली गई तो भविष्य में उससे उबरना कठिन है।

बालपन से ही भोजन के साथ -साथ खाद्य पदार्थो के गुणों व उपयोगिता को बच्चों को बताने से न केवल उनकी भोजन के प्रति उत्सुकता बढेगी अपितु उनका ज्ञानवर्धन भी होगा द्य बच्चों की दिनचर्या में बदलाव लाकर उन्हें उत्तम स्वास्थ्य व आहार की उपयोगिता बताते हुए समयानुसार सोना, जागना, खेलना पढना आदि की आदत डालनी होगी ।बच्चे तो कुम्हार की माटी की तरह होते हैं जैसे ढालो वैसे ही ढल जाते हैं बच्चों से अधिक कहीं न कहीं हमें बदलने की आवश्यकता है।

किरण बाला चंडीगढ़

कहानी

एक चिड़िया

कुशीनगर राज्य बड़ा खुशहाल राज्य था, वहाँ के राजा अपनी प्रजा को अपनी औलाद की तरह प्यार करते थे। वे बहुत प्रतापी और वीर थे आस-पास के राजा उनसे युद्द का साहस नहीं कर सकते थे। उनकी प्रजा भी राजा को अपने पिता का सम्मान देती थी, चारो ओर खुशहाली थी कहीं कोई कमी नहीं थी। उनके राज्य भी अमन और शांति थी। राज प्रतिदिन रात में सबके सोने के बाद, अपनी प्रजा की सुध लेने वेश बदलकर जाया करते थे। ये देखना चाहते कि उनके राज्य में कोई ऐसा व्यक्ति तो नहीं जो दरिद्र हो, जो भूखे पेट सोया हो, कोई रोगी तो नहीं, कोई असहाय तो नहीं। राजा के गुप्तचर कहते महाराज

आप अपनी नींद क्यों ख़राब करते हैं हम हैं न, सब तरफ देख लेंगे, किन्तु राजा जब-तक स्वयं नहीं जात थे तब-तक उन्हें संतुष्टि नहीं मिलती थी। वे बड़े खुश होते थे कि आज उनके कारण उनकी प्रजा कितनी खुश और संतुष्ट है।इस प्रकार सोचते- सोंचते राजा के भीतर कहीं न कहीं अहंकार ने जन्म ले लिया, कि उनका राज्य उनके कारण सम्पन्न है, वो नहीं रहेंगे, अपनी प्रजा की देखभाल नहीं करेंगे तो उनकी प्रजा नहीं रह पाएगी। राजा ने अपने नगर के चारो ओर बाग बगीचा भी लगवाया था। जिसमें फल, फूल, हर पल मुस्काते और पशु पक्षी गाते रहते। ये देख राजा बड़े आनंदित होत।

एक दिन उनको दूसरे राज्य के राजा के द्वारा किसी उत्सव का निमन्त्रण आया, वे निश्चित समय पर निकल गए रास्ते म उनका बगीचा आया वे खुशी से झूम उठे अरे वाह कितना सुंदर मनोहर लग रहा है। ये सब मेरी वजह से है। राजा बहुत खुश थे, फूले न समा रहे थे। तभी अचानक एक चिड़िया उधर से आई और राजा के उपर बिट कर दी। अब तो राजा क्रोध से आग बाबुला हो गए, उत्सव में न जाकर वापस आ गए और आदेश दिया कि उनके राज्य में जितने भी पेड़ पौधे हैं, सबको जला दिया जाए। बुद्धजीवियों ने कितना समझाया किन्तु राजा नहीं माने, अंत में वहाँ के सारे वृक्ष जला दिए गए।नतीजा सारे पशु पक्षी जो बच सकते थे बचे जो नहीं बच सकते थे वो जल के मर गए।

उस साल बारिस नहीं हुई नतीजा फसल नहीं हुई। जबतक रसद थी किसी प्रकार काम चला। दूसरे साल भी बारिश नहीं हुई अब राजा की चिंता बढ़ गई उन्होंने पुरोहित को बुलाया, पंडित जी क्या बात है, बारिश क्यों नहीं हो रही है। पंडित जी ने कहा महाराज आपने वृक्षों को काटकर घोर अपराध किया है, इसलिए अब आपके राज्य में कभी खुशहाली नहीं आएगी। हर साल सूखा पड़ेगा, ये सुनकर उस राज्य की प्रजा दूसरे राज्य में जाने लगी कि मरने से अच्छा है हम किसी और राज्य में चले। राजा ने पूछा पंडित जी कोई उपाय उन्होंने कहा ष्पेड़ लगाये जाए तभी खुशहाली आयेगी। राजा ने कहा “ये सम्भव नहीं” तब राजन आपकी प्रजा अपनी जान बचाने दूसरे राज्य में जा रही है, आपका सारा मान, सम्मान सब नष्ट हो जाएगा। तब राजा की आंखे खुली उन्होंने मंत्री को वृक्ष लगाने का आदेश दिया । कुछ माह में गई रौनक वापस आने लगी राजा को समझ में आ गया क्रोध मे लिए गए फैसले ने कितना नुकसान किया।

प्रकृत्ति ने शदिखाकर आपदा का रौद्ररूप,
बता दिया प्रकृति ने मानव को अपना स्वरुप.!
हे मानव समय रहते न सुधरे अगर तुम,
तुम्हारी आनेवाली पीढ़ी सहेगी कुठाराघात.!

इंदु उपाध्याय, पटना बिहार

डा प्रभात पांडें भोपाल

पढ़ने की डालो आदत

हम अक्सर बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास करने के बारे में सुनते हैं। इस बारे में चर्चा भी होती है। लेकिन क्या आपने कभी इस बात पर गौर किया है कि जब तक माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक खुद अपने पढ़ने की आदत का विकास नहीं करते, बच्चों को केवल कहने उनमें पढ़ने की ललक का विकास नहीं होगा। इस बात ने इस मुद्दे पर सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि बड़ों में पढ़ने की आदत का वर्तमान ट्रेंड क्या है और कौन-कौन से कारण हैं जिसके कारण वे पढ़ने की आदत डालने में परेशानी महसूस करते हैं।

बड़े चाहते हैं कि बच्चे पढ़ें, लेकिन वे खुद बच्चों को पढ़ते हुए नजर नहीं आते। ऐसे में बच्चों पर उनकी कही हुई बातों का भी बहुत ज्यादा असर नहीं होता है।बतौर पाठक अपना खुद का मूल्यांकन करने के लिए आप सोच सकते हैं कि पिछले एक साल में आपने कितनी किताबें पढ़ीं? कितनी किताबों का चुनाव आपने स्वेच्छा से अपनी रूचि के अनुसार किया? कितनी किताबों को आपके मन में पढ़ने की इच्छा हुई, लेकिन आपने उस किताब को खरीदना या किसी दोस्त से लेना आगे के लिए टाल दिया। कई बार ऐसा भी होता है कि पुस्तक मेले या पियर प्रेसर में आप कई किताबें खरीद लाते हैं, लेकिन फिर वे किताबें पड़ी-पड़ी धूल फांकती हैं या फिर आलमारी की शोभा बढ़ाती हैं। उनसे बतौर सक्रिय पाठक आपकी मुलाकात नहीं होती है।

पढ़ने के लिए एक प्रेरणा और मोबाइल फोन व अन्य संचार-मनोरंजन के व्यवधान से आजादी चाहिए होती है, क्योंकि ये चीजें आपका ध्यान पढ़ने से हटा लेती हैं। फिर पढ़ने का प्रवाह टूट जाता है और दोबारा उस किताब की तरफ बड़ी मुश्किल से लौटना होता है।

पढ़ने की मेहनत करने का संकल्प करें

अगर आप कोई किताब पढ़ रहे हैं तो कई बार ऐसा होता है कि आपके साथी कहते हैं कि इस किताब में क्या है? पढ़ने के बाद मेरे साथ शेयर कर दीजिएगा। दूसरा तरीका कि जदो किताब आप पढ़ रहे हैं, उसके ऊपर पीपीटी बना दीजिएगा ताकि बाकी लोगों को भी किताब पढ़ने का लाभ मिल सके। तीसरा तरीका किताब पढ़ने की क्या जरूरत है, मेरे साथ के लोग तो मुझे किताब पढ़कर बता ही देते हैं कि किताब में मुख्य-मुख्य बात क्या कही गई है। टेक्नोल,जी का भी इस्तेमाल खूब होता है जैसे किताब की समीक्षा गूगल सर्च करो और प्ढ़ लो। अगर किताब के ऊपर कोई वीडियो है तो यू-ट्यूब पर सर्च करो और देख लो। किताब तो बाद में पढ़ी जाएगी। यह तरीके कुछ हद तक मदद करते हैं। लेकिन बतौर पाठक किसी किताब को पढ़ने से जो आपकी समझ में बढ़ोत्तरी होती है। शब्द भण्डार संपन्न होता है। आप अपने अनुभवों के लिए शब्द खोज पाते हैं। उदाहरण बनाने और तर्क देने की क्षमता का जो विकास करते हैं, वह केवल दूसरों पर निर्भरता से हासिल नहीं होगा। तो पढ़ने से बचने वाली आदत के कारण खुद से पढ़ने की आदत का विकास बड़ों में नहीं हो पाता है। हालांकि वे सैवैधानिक तौर पर इस बात को स्वीकार तो करते हैं और कहते भी हैं कि पढ़ना बहुत जरूरी है।

पढ़ने का चस्का: बच्चे और बड़े

बड़ों को पढ़ने का चस्का लगाना, बच्चों से ज्यादा मुश्किल काम है। व्यावहारिक अनुभव तो इस तरफ संकेत करते हैं। हालांकि रीडिंग रिसर्च इस बारे में क्या कहती है, यह अध्ययन करने व खोजने का एक अच्छा टापिक है।

मैंने ऐसी टीम के साथ काम किया जो बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित हो इस लक्ष्य के साथ काम कर रही थी, लेकिन वह टीम खुद किताबों को पढ़ने में बहुत कम भरोसा करती थी। किसी पठन गतिविधि को करते समय उनका पूरा ध्यान प्रक्रिया और स्टेप को फालो करने में लगा रहता, ऐसे में कहानी का मजा किरकिरा हो जाता था। टीम के पढ़ने की आदत का विकास हो, इस दिशा में विरले ही टीम लीडर काम करते हैं। लेकिन इस दिशा में काम करने के सकारात्मक परिणाम होते हैं, इस बात से शायद ही कोई इनकार करेगा।

पढ़ने के लिए समय निकालना बहुत जरूरी होता है। अगर हम सुबह के समय बगैर कुछ पन्ने पढ़े या लिखे कोई और काम करने की तरफ न बढ़ें और इसे रूटीन का हिस्सा बना लें तो काफी हद तक संभव है कि हम अपने पढ़ने-लिखने के लिए एक बेहद उपयोगी और ऊर्जावान समय निकाल सकेंगे। इसके लिए सुबह-सुबह ह्वाट्सऐप और फेसबुक के नोटीफिकेशन चेक करने और उनका रिप्लाई करने की आदत को भी बदलना पड़ेगा।क्योंकि रूटीन की इस आदत के कारण हमारा काफी सारा समय यहां सप्लाई होने वाले ऐसे मैसेज को पढ़ने और अनुपयोगी तस्वीरों व वीडियो को डिलीट करने में चला जाता है। इस समय का अच्छा इस्तेमाल जरूरी है। दिनभर स्क्रीन पर होने का हमारे ऊपर असर पड़ता है। इसलिए जरूरी है कि हम कुछ समय स्क्रीन से इतर किसी किताब को पढ़ने। किसी किताब के ऊपर अपने मन में आने वाले विचारों को पेन-पेपर की मदद से लिखने की कोशिश करें, यह हमारे मन को एक सकारात्मक ऊर्जा से भरेगी और विचारों के बाधित प्रवाह को फिर से आगे बढ़ने का रास्ता देगी।

खुद को पढ़ने का चस्का कैसे लगाएं?

खुद को पढ़ने का चस्का लगाने का सबसे अच्छा तरीका अपनी जिज्ञासा को दबाने से बचना है। अपने मन में उठने वाले सवालों का जवाब जानने की मेहनत में कंजूसी न करें। किताबों के पन्ने पलटें, लोगों से सही किताब के बारे में पूछें, किसी टापिक पर लिखना है तो उस पर कुछ पढ़ें, किसी डाक्युमेंट पर टीवी प्रोग्राम देखकर राय कायम न करें, खुद उस दस्तावेज को पढ़ें फिर स्वतंत्र चिंतन से अपनी राय बनाएं।

किसी कविता, कहानी या गद्य को पढ़ने के बाद उसके बारे में चिंतन या रिफलेक्शन करें। उसके बारे में थोड़ा ठहकर सोचें कि लेखक ने ऐसी बात क्यों लिखी होगी, लेखक के सामने क्या परिस्थितियां रही होंगी, लेखक कहना क्या चाहता है, क्या लेखक अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कह पा रहा है इत्यादि। ऐसे प्रयास से आपको पढ़ी हुई किताब की सामग्री और उसके मुख्य बिंदु याद रहेंगे।किताब पढ़ने की प्रक्रिया में नोट्स लें। अपने मन में आने वाले महत्वपूर्ण विचारों को नोट करें। महत्वपूर्ण अंश को रेखांकित करें ताकि दोबारा कुछ खोजते समय आपको आसानी से वह अंश मिल जाए। पुस्तक समीक्षा लिखना भी एक अच्छा जरिया है।

इस विचार या भ्रम को तोड़ना कि हमारा काम बगैर पढ़े भी चल सकता है। हमारा काम पढ़ने की आदत और उससे

मिलने वाले विचारों से कई गुना बेहतर हो सकता है, इस सकारात्मक संभावना में ज्यादा शक्ति है। इसलिए पढ़ने की मेहनत करें और अपनी समझ को बेहतर करें। जब किसी किताब को पढ़ने बैठें तो उसे सरसरी निगाह से देखें। पुस्तक के लेखक-चित्रकार, प्रकाशन, मूल्य और किताब के प्रमुख चौप्टर और उसके शीर्षक को देखें फिर उसे विस्तार से पढ़ें। अपने काम से जुड़ी सामग्री को पढ़ना और वहाँ से मिलने वाले विचारों को जमीनी स्तर पर लागू करने की आदत आपको एक बेहतर क्रियान्वयन वाले लीडर के रूप में स्थापित कर सकती है। तो फिर लगातार पढ़ते रहिए, जीवन में नये विचारों को इस खिड़की से ताजी हवा के झोंकों की तरह आने दीजिए।

सपना

कितना मुझे तरसाते हो
छलिया हो जादूगर तुम
मेरी निदिंया चुराते हो
सपनों में आ कर तुम।

यादों में तेरी खोई रहूँ
विरह की घड़ियाँ कठिन
मैं तड़प रही दिन-रात
जैसे जल बिन मीन।

दिल दिया है तुमको
चाहा है जान से ज्यादा
आबाद रहो तुम हमेशा
है मेरे दिल की दुआ।

जयश्री शर्मा 'ज्योति'
जोरहाट |असम

स्वर्ण ज्योति पॉण्डिचेरी की किताबें

कभी उन्हें सीने पर रख
नींद में खो जाते
लफ्ज-लफ्ज चुपचाप
ख्वा़ब बन जाते
सफा पलटने में भी
आता था मजा
पाक-पकवानों से
अलग जायका था चखा
तन्हाई में वो
सच्चा हमसफर
साथ रहता
हर रहगुजर
नीमरोज की धूप में
मिलने का बहाना बनती
जहां की नजरों से छुपाकर
प्यार का पैगाम लाती
कभी मुड़ा हुआ कोना
यादों को जगाता
कभी सूखा गुलाब
प्यार को बढ़ाता
ऐनक कभी कलम साथी होते
कोना एक तिपाई काफी होते
अब सब छूट गए
कागज कलम रूठ गए
अब सीने पर नहीं
लफ्जों के ख्वाब
दो उंगलियों के बीच
सिमट कर रह गए हम
और कमरे के कोने में
काठ की अलमारी से
झांकती रह गई किताबें
चुपचाप बेबस सी
अपनों का इंतेजार
करती रह गई किताबें....

किताबों के मेले में

कलमकार जी अपने गांव से दिल्ली आये हुये थे किताबो के मेले में । दिल्ली का प्रगति मैदान मेलो के लिये नियत स्थल है , तारीखें तय होती हैं एक मेला खत्म होता है , दूसरे की तैयारी शुरू हो जाती है । सरकार में इतने सारे मंत्रालय हैं , देश इतनी तरक्की कर रहा है , कुछ न कुछ प्रदर्शन के लिये , मेले की जरूरत होती ही है। साल भर मेले चलते रहते हैं । मेले क्या चलते रहते हैं। लोग आते जाते रहते हैं तो चाय वाले की । पकौड़े वाले की , फुग्गे वाले की आजीविका चलती रहती है । इन दिनो किताबो का मेला चल रहा है । चूंकि मेला किताबों का है । शायद इसलिये किताबें ज्यादा हैं आदमी कम जो आदमी हैं भी वे लेखक या प्रकाशक। प्रबंधक ज्यादा हैं । पाठक कम । लगता है कि पाठको को जुटाने के लिये पाठको का मेला लगाना पड़ेगा । मेले में तरह तरह की किताबें हैं।

कलमकार जी को सबसे पहले मिलीं रायल्टी देने वाली किताबें , ये ऐसी किताबें हैं जिनके लिखे जाने से पहले ही उनकी खरीद तय होती है । इनके लेखक बड़े नाम वाले होते हैं , कुछ के नाम उनके पद के चलते बड़े बन जाते हैं , कुछ विवादों और सुर्खियो में रहने के चलते अपना नाम बड़ा कर डालते हैं । ये लोग आत्मकथा। टाइप की पुस्तकें लिखते हैं। जिनमें वे अपने बड़े पद के बड़े राज खोलते हैं, खोलते क्या किताबों के पन्नो में हमेशा के रिफरेंस के लिये बंद कर डालते हैं । इन किताबों का मूल्य कुछ भी हो , किताब बिकती है, लेखक के नाम के कांधे पर बिकती है । सरकारी खरीद में बिकती है । लेखक को रायल्टी देती है ऐसी किताब । प्रकाशक भी ऐस तरह की किताबें सजिल्द छापते हैं , भव्य विमोचन करवाते हैं , नामी पत्रिकायें इन किताबों की समीक्षा छापती हैं । दूसरे तरह की किताबें होती हैं बच्चो की किताबें , अंग्रेजी की राइम्स से लेकर विज्ञान के प्रयोगो और इतिहास व एटलस की , कहानियों की , सुस्थापित साहित्य की ये किताबें प्रकाशक के लिये बड़ी लाभदायक होती हैं । इन रंगीन , सचित्र किताबों को खरीदते समय पिता अपने बच्चो में संस्कार , ज्ञान , प्रतियोगिताओ में उत्तीर्ण होने के सपने देखता है । बच्चे बड़ी उत्सुकता से ये किताबें खरीदते हैं , पर कम ही बच्चे इन्हें पूरा पढ़ पाते हैं , और उनमें से भी बहुत कम इनमें लिखा समझ पाते हैं , पर जो जीवन में इन किताबो को उतार लेता है , ये किताबें उन्हें सचमुच महान बना देती हैं । कुछ बच्चे इन किताबों के स्टाल्स के पास लगी रंगीन नोटबुक , डायरी , स्टेशनरी , गिफ्ट आइटम्स की चकाचौंध में ही खो जाते हैं , वे इन किताबों तक पहुंच ही नही पाते ,ऐसे बच्चे बड़े होकर व्यापारी तो बन ही जाते हैं ।

कलमकार जी ज्यों ही धार्मिक किताबो के स्टाल के पास से निकले तो ये किताबें पूछ बैठी हैं उनके आस पास सीनियर सिटिजन्स ही क्यों नजर आते हैं ?वह तो भला हो रेसिपी बुक्स ट्रेवलाग , काफी टेबल बुक्स , गार्डनिंग ,गृह सज्जा और सौंदर्य शास्त्र के साथ घरेलू नुस्खों की किताबों के स्टाल का जहां कुछ नव यौवनायें भी दिख गई कलमकार जी को ।

एक बड़ा सेक्शन देश भर से पधारे ,अपने खर्चे पर किताबें छपवाने वाले झोला धारी कलमकार जी जैसे कवियों और लेखको के प्रकाशको का था , ये प्रकाशक लेखक को अगले एडीशन से रायल्टी देने वाले होते हैं । करेंट एडीशन के लिये इन प्रकाशको को सारा

व्यय रचनाकार को ही देना होता है , जिसके एचज में वे लेखक की डायरी को किताब में तब्दील करके स्टाल पर लगा देते हैं । किताब का बढ़िया सा विमोचन समारोह संपन्न होता है ,विमोचन के बाद भी जैसे ही घूमता हुआ कोई बड़ा लेखक स्टाल पर आता है।किताब का पुनः लोकार्पण करवा कर हर हाथ में मोबाईल होने का सच्चा लाभ लेते हुये लेखक के फेसबुक पेज के लिये फोटो ले ली जाती है । ऐसा रचनाकार आत्ममुग्ध किताबों के मेले का आनन्द लेता हुआ , कोने के टी स्टाल पर इष्ट मित्रो सहित चाय पकौड़ो के मजे लेता मिलता है ।

मेले के बाहर फुटपाथ पर भी विदेशी अंग्रेजी उपन्यासों का मेला लगा होता है , पुस्तक मेले की तेज रोशनी से बाहर बैटरी की लाइट में बेस्ट सेलर बुक्स सस्ती कीमत पर यहां मिल जाती हैं । दुनियां में हर वस्तु का मूल्य मांग और सप्लाई के इकानामिक्स पर निर्भर होता है किन्तु किताबें ही वह बौ)क संपदा है , जिनका मूल्य इस सिद्वांत का अपवाद है,किसी भी किताब का मूल्य कुछ भी हो सकता है । इसलिये अपने लेखक होने पर गर्व करते और कुछ नया लिख डालने का संकल्प लिये कलमकार जी लौट पड़े किताबों के मेले से ।

विवेक रंजन श्रीवास्तव
जबलपुर मध्यप्रदेश

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें
महिला उत्थान योजना अन्तगर्त
आनलाइन प्रशिक्षण
9451647845

शहीद की दहली

हर घर के आगे दीये जलाए जा रहे थे,कई तरह से रोशनी की जा रही थी,हर तरफ एक अलग तरह की सकारात्मक ऊर्जा प्रसारित हो रही थी,सब उत्सव मना रहे थे। नीतू के घर के बिल्कुल सामने एक छोटे से घर में ना कोई दीया था ना कोई रोशनी।

नीतू को पता था वहाँ एक बुजुर्ग महिला रहती हैं, जिसका एक ही बेटा था जो की सेना का जवान था,जिसने देश के लिए सीमा पर लड़ते हुए अपने प्राण निछावर कर दिए थे।

राधा नाम की यह बुजुर्ग महिला हर सुबह शबरी की तरह अपने राम का रास्ता देखती थी,कोई नहीं था सहारा देने को,सरकार द्वारा मिली पेंशन राशि से जैसे तैसे दिन काटती थी।

हर तरफ रोशनी के बीच एक घर मे अँधियारे में देखकर नीतू से रहा नहीं गया उसने अपनी थाली में पाँच दीये और रखे और चल पड़ी एक शहीद की दहली को रोशन करने।

ज्योति शर्मा
जयपुर राजस्थान

जबरदस्त और जबरदस्ती

जबरदस्ती ऐसा शब्द है जिसका अर्थ जबरदस्त से हटकर अलग है । मैं इन शब्दों से अनभिज्ञ हूँ। मेरी बु) दोनों शब्दों पर बहुत कुछ सोचती है। बु) बस सोचती ही रहती है कुछ कर नहीं सकती। मेरी तर्क बु) भी जबरदस्त और जबरदस्ती पर विचारती है। एक ही शब्द के प्रयोग अलग अलग वैसे ही हो सकते हैं। जैसे एक माँ की विभिन्न संतान ।

जबरदस्त से तात्पर्य किसी कार्य का हुनर या लौकिक क्रियाओं की भूरि - भूरि प्रशंसा हो सकती है। जो मन में अच्छा प्रभाव उत्पन्न कर दे उसे जबरदस्त कह सकते हैं ।जबरदस्त से ही जबरदस्ती शब्द मिला है। जिसमें बलपूर्वक,बलात किए गये कार्य को जो हमारे अनुकूल न होकर विपरीत किया गया हो उसे जबरदस्ती कहते हैं।

जबरदस्ती कई प्रकार की होती है। जिसका प्रयोग मानव समाज जन्म जन्मांतरण से करता आ रहा है । आजकल जबरदस्ती का अर्थ शारीरिक संवेदनाओं में ज्यादा होने लगा है। जो अपने बल का दुरुपयोग कर किसी पर जबरदस्ती हो सकती हैं। वैसे तो जबरदस्ती का क्षेत्र इतना व्यापक है इस पर एक ग्रंथ ही लिखा जा सकता है। यह अधिकारियों की,कर्मचारियों की,नेताओं की,छात्रों की, मजदूरों की जबरदस्ती या उन पर जबरदस्ती हो सकती है।

इसके बाद धर्म आ जाता है। धर्म पर उनके ठेकेदारों द्वारा अनुसरण कराने, करने की जबरदस्ती हो सकती है। उन पर उनके सिद्वान्तों आदि पर अलग-अलग प्रकार की जबरदस्ती हो सकती है। मंदिर में प्रवेश ,किसे करना क्या करना है क्या नहीं करना है। इन सब पर जबरदस्त माहरत हासिल किये हैं अनुयायियों ने।

आजकल साहित्य में भी जबरदस्ती का प्रयोग बढ गया है। साहित्य मंच कवि सम्मेलनों में जबरदस्ती एक के बाद एक ,दो - तीन कवितायें पढ़ देना, जनता समझे या नहीं।कवि सम्मेलनों में सुने सुनाये चुटकुलो को डाल देना, जबरदस्ती ही है। रचनाकारों द्वारा रचनाओं पर जबरदस्ती के प्रयोग , शब्दों को गीत गजल में जबरदस्ती ठूंसना भी साहित्य में जबरदस्त माना जा रहा है।

मान लीजिए कोई बहर या मापनी बनी है तो उस बहर मापनी में रचना रचित हुई होंगी। तभी तो वह मापनी प्रचलन में आयी। परंतु इसमें भी जबरदस्ती होने लगी। बहर मापनी की बताकर शब्दों को जबरदस्ती ठूंस कर बहर से बाहर हो रहे हैं।बहर में जबरदस्ती का जबरदस्त प्रयोग हो रहा है। जिससे साहित्य पर जबरदस्त प्रभाव पड़ रहा है।हमें जबरदस्त प्रभाव जागृत करने के लिए जबरदस्ती के प्रयोग पर शोध करना है । इस शोध में मैं और आप जबरदस्ती के प्रयोगों को रोकने में सफल हों ऐसी आशा है।

डॉ रामकुमार चतुर्वेदी
सिवनी मध्यप्रदेश

दिल ही तो है

रमेश और गौरव घनिश्ठ मित्र थे। दोनों एक-दूसरे के हमराज भी थे और हमदर्द भी थे। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे और पढ़ाई के साथ-साथ शरारत में भी दोनों एक-दूसरे का साथ देते थे। हर दिन की भाँति दोनों अपनी कक्षा के बाहर बातें कर रहे तभी एक लड़की ने आकर उनसे पूछा, ''जी क्या आप बता सकते हैं कक्षा ग्यारहवीं 'अ' किधर है?'' रमेश ने तपाक से पूछा, ''न्यू एडमिशन? क्या नाम है? हम लोग भी ग्यारहवीं 'अ' में ही पढ़ते हैं। कहाँ से आई हो?'' प्रश्नों की बौछार से लड़की घबरा-सी गई और उसने गौरव से पूछा, ''जी आप बता सकते हैं कक्षा ग्यारहवीं 'अ' किधर है?'' गौरव ने गंभीर होते हुए कहा, ''जी सामने है।'' गौरव को धन्यवाद देते हुए वह कक्षा में चली जाती है। उसके जाते ही रमेश ने अपने मित्र से पूछा, ''गौरव इसने मेरे सवालों का जवाब क्यों नहीं दिया? भाई मेरी समझ में तो नहीं आया। चल कक्षा में, अध्यापक आ रहे हैं। कक्षा में सारे बच्चे पढ़ाई में लग जाते हैं पर रमेश का पूरा ध्यान उस लड़की पर ही था। शिक्षिका से हुई बातचीत के दौरान पता चला कि उस लड़की का नाम रूपा है और वह कानपुर से आई है। रूपा कक्षा के अन्य छात्राओं से काफी अलग थी। सादगी पसंद, सुंदर, हँसमुख, मिलनसार और बुद्धिमती। वह सोचकर आई थी कि किसी लड़के या लड़की से भी ऐसी दोस्ती नहीं करेगी जिससे उसकी पढ़ाई बाधित हो। कानपुर से आते समय ही उसकी सहेलियों ने समझा दिया था कि दिल्ली के लड़कों से दूर ही रहना नही ंतो पढ़ाई चौपट हो जाएगी। रमेश दिल्ली का ही रहने वाला था और पढ़ाई से उसका छत्तीस का आँकड़ा था। शरारती था पर बदतमीज नहीं। कक्षा की सारे बच्चे उसके अच्छे दोस्त थे। आज रूपा का उसे इस तरह नजरअंदाज करना बुरा मानने वाली बात थी, पर उसे पता नहीं क्यों ये बात अच्छी लगी और वह उसकी ओर आकर्शित हो गया। उसे रूपा बहुत अच्छी लगी। उसे गौरव ने समझाया भी कि रूपा की तरफ ध्यान न दे। पर किसी के कुछ समझाने से क्या होता उसके दिल ने रूपा को अपना मान लिया था। कुछ ही दिनों में रूपा कक्षा की सभी छात्राओं से न चाहते हुए भी घुल-मिल गई। उसके मिलनसार स्वभाव और हँसमुख चेहरे की वजह से उसकी दोस्ती सबसे हो ही जाती थी। अब वह केवल लड़कों से दूरी बनाए रखने में कामयाब रह पाई थी। हालाँकि रमेश रूपा को बहुत पसंद करता था लेकिन कभी उसने उसे कुछ नहीं कहा। पर ऐसा भी नहीं था कि रूपा रमेश के दिल की बातों से अनजान थी। रमेश की आँखें और रमेश द्वारा रूपा की हर संभव मदद करना उसके मनोभावों को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त था।

देखते-देखते समय पंख लगाकर उड़ गया और कक्षा बारहवीं के विदाई-समारोह का दिन भी आ गया। अब रमेश भी रूपा से प्रेरित होकर पढ़ने लगा था और उसके रंग में ढलने लगा था। विदाई-समारोह के दौरान रमेश को रूपा के निकट आने का मौका मिला और उसने भी उसके साथ कुछ तस्वीरें खिचवाई। आज उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। 'विदाई-समारोह' के बाद जल्दी छुट्टी कर दी गई। सब अपनी व्यवस्था करके घर चले गए। परंतु रूपा तो स्कूल बस से ही घर जाती थी, इसलिए वह चुपचाप बैठकर छोटे बच्चों की छुट्टी होने की प्रतीक्षा करने लगी। रमेश भी घर नहीं गया था और उसने रूपा से घर न जाने की वजह पूछी। रूपा की समस्या सुनकर उसने सहमते हुए उससे पूछा, '' अगर तुम चाहो तो क्या मैं तुम्हें अपनी गाड़ी में घर छोड़ दूँ? तुम्हारे चार घंटे बच जाएँगे। चलोगी मेरे साथ?''

रूपा ने उत्तर दिया, ''ठीक है चलो। वैसे भी इसके बाद हम कहाँ मिलेंगे? चलो पर घर तक छोड़ना।'' रमेश ने खुशी-खुशी अपनी गाड़ी निकाली और रूपा के साथ उसकी घर की ओर चल पड़ा। उसने कहा, '' जानती हो रूपा मेरा दिल कह रहा था कि आज पापा से कार माँग कर मैं बहुत अच्छा काम कर रहा हूँ। पर ये नहीं जानता था कि मेरा दिल ऐसा क्यों कह रहा है? आज मैं बहुत खुश हूँ।'' मुस्कुराते हुए रूपा बोली, '' मुझे भी कहाँ पता था कि विद्यालय के आखिरी दिन भी तुम ही साथ दोगे। अपना ख्याल रखना और आज से तुम मुझे अपना अच्छा दोस्त समझना। मेरा घर आ गया। चलती हूँ और हाँ दिल को जो समझाओगे समझ जाएगा क्योंकि दिल ही तो है।''

सीमा रानी मिश्रा, हिसार

वो बचपन की यादें

ओ बचपन की यादे ओ बचपन की बातें
कोई उनसे कहता ओ फिर लौट आते
काश!!ओ बचपन फिर लौट आता

ओ बदल की गरजन, ओ बारिस की बुँदे
ओ मेंढक की टर टर,ओ आसमान के परिंदे
कोई उनसे कहता ओ फिर से बरसते
काश!! वो बचपन फिर लौट आता

ओ कागज की कश्ती,ओ बचपन की मस्ती
ओ बच्चों की गश्ती, ओ दादी की भक्ति
कोई उनसे कहता ओ फिर से चहकते
काश!! वो बचपन फिर लौट आता

ओ घोड़ो का टमटम,ओ जुगनू की चमचम
ओ दिए की टिमटिम,ओ तारो की जगमग
कोई उनसे कहता ओ फिर से चमकते
काश!! ओ बचपन फिर लौट आता

ओ मेले की फिरकी,ओ ठेले की बर्फी
ओ जादू की झप्पी ओ मम्मी की थपकी
कोई उनसे कहता ओ फिर से थपकते
काश!!वो बचपन फिर लौट आता

ओ मिट्टी की खुसबू,ओ दीवाली के घरौंदे
वो ओसो की बुँदे जो घासों पे बिखरे
कोई उनसे कहता ओ फिर से बिखरते
काश!! ओ बचपन फिर लौट आता

अनुभा वर्मा पटना, बिहार

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व
माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें
महिला उत्थान योजना अन्तगर्त
आनलाइन प्रशिक्षण
9451647845

नई शुरूआत

मैं हूं बूंद ओस की
नीर बनने की आस है
खुशियों भरी ये शुरूआत
मेरे लिए कुछ खास है
कुछ अड़चन भरी राहें मेरी
कुछ उलझन भरी आहें मेरी
चलूं किस पथ ना मुझे
आभास है फिर भी
शुरूआत कुछ खास है
मैं हूं एक कली पुष्प की
खिलने की मुझे आस है
नया जीवन,नई उमंग
यह शुरूआत कुछ खास है
कुछ कीट,कुछ पतंगे भक्षक मेरे
कुछ पत्ते,कुछ परिंदे रक्षक मेरे
क्या होगा क्या पता ना
मुझे कोई भास है
फिर भी शुरूआत
कुछ खास है
मैं हूं बादल घनेरा
बरसने की मुझे आस है
खुशियां बरसाती नई शुरुआत
मेरे लिए कुछ खास है
कुछ धुंध छाई जमीं पे,
रोके मेरे कदम
कुछ नमी आई जमीं पे
चूमे मेरे कदम
नमी की धुंध पर जीत हुई
मैं बरसा जमके मुझे जमीं से प्रीत हुई।
मैं हूं धूल जमीं की
उड़ने की मुझे आस है
खुशियों भरी यह शुरुआत
मेरे लिए कुछ खास है
आंधी रोक रही राह मेरी खा सुन रही
आह मेरी किसी की ना सुनु मैं
मेरे अपने मेरे पास है
खुशियों भरी शुरुआत
मेरे लिए कुछ खास है।

मीना सोनी ,अजमेर

नारी और समाज

भारतीय सभ्यता-संस्कृति पूरे विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखती है, यह सत्य किसी से भी छिपा हुआ नहीं है।यहाँ स्त्रियों को देवी-तुल्य माना गया है। वैदिक काल से ही नारियाँ जहाँ एक ओर गृहस्थ जीवन के सम्यक संचालन में असाधारण रूप से कुशल एवं सक्षम रही हैं वहीं दूसरी ओर ज्ञान के क्षेत्र में विदुषी, शास्त्रार्थ संचालन में पटु और मन्त्रणा देने में भी अग्रणी भूमिका निभाती रही हैं।हमारे पौराणिक धार्मिक ग्रन्थों में नारी का एक विशिष्ट स्थान रहा है।मनुस्मृति में तो नारी की पूजा पर भी बल दिया गया है-'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता।' अर्थात जहाँ समाज या परिवार में स्त्रियों का सम्मान होता है वहाँ देवताओं(दिव्य गुण वालों) का निवास होता है।इससे नारी की महत्वपूर्ण भूमिका स्वतः ही परिलक्षित हो जाती है।

प्राचीनकाल से ही नारी महापुरुषों के जीवन को सँवारने में एक गुरु की तरह मार्गदर्शन करती आई है।
पौराणिक ग्रन्थों में नारी के चार रूपों का वर्णन किया गया है माता,भार्या,पुत्री और बहन। अपने हर रूप में नारी अहम भूमिका निभाती रही है।हमारा समाज नर-नारी रूपी दो पहिये वाली गाड़ी है।नारी के सौम्य स्वभाव,त्याग,सेवा और दूसरों के प्रति स्नेह से ही समाज आलोकित , शुशोभितऔर पुष्पित-पल्लवित होता रहा है।प्राचीन काल से ही भारतीय इतिहास नारी के साहस और पराक्रम की गाथाओं से भरा हुआ है। प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी रूप में वह पुरुष का सहयोग करती आई है।यहाँ तक कि देवताओं ने भी नारी शक्ति के सहयोग से ही राक्षसों पर विजय प्राप्त की।वैदिक काल की नारी जो शक्ति, साहस और प्रेरणा की अक्षय स्रोत थी,विद्वता, बुद्धिमत्ता, सहनशीलता और कार्यकुशलता का असीमित भण्डार थी ,मध्यकाल में मुगलों के आक्रमण से उस चरम बिन्दु पर ऐसा ग्रहण लगा कि उसी शक्ति रूपा को परदे के पीछे रहने को मजबूर कर दिया गया और वह अपने वास्तविक स्वरूप को ही भूल बैठी। जैसे- जैसे समय बीतता गया उसके वास्तविक स्वरूप पर धूल की परत चढ़ती चली गई और वह सबला से अबला बनती चली गई।उसकी इस दीन -हीन सामाजिक दशा को देखते हुए ही राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की आत्मा से ये शब्द निस्त्रित हुए-'अबला जीवन, हाय!तेरी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।'
मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की दयनीय दशा से हम भली भाँति परिचित हैं।सती प्रथा, बालविवाह, पर्दा प्रथा,वेद पढ़ने पर रोक आदि कई तरह की परम्पराओं में नारी को जकड़ दिया गया।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती और सती प्रथा के उन्मूलनकर्ता राजा राममोहन रहय जैसे समाज सुधारक महापुरुषों के अथक प्रयासों से समाज में व्याप्त नारी प्रताड़ना जैसी दुष्प्रवृत्तियों पर रोक लगा दी गई और नारी उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किए गए जिसके फलस्वरूप महिलाएँ आज स्वतन्त्र भारत की स्वतंत्र नारी बनकर हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कदम से कदम मिला कर प्रगति पथ पर अग्रसर है।स्वामी दयानंद सरस्वती ने शशक्त वाणी में कहा था कि मानव के जीवन निर्माण में तीन व्यक्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है-माता,पिता और शिक्षक। माता का स्थान सर्वोपरि है।बच्चे के गर्भ में आने से लेकर उसके जन्म,लालन-पालन में माँ जितनी सजग रहेगी बच्चे का भविष्य उतना ही उज्ज्वल होगा।

एक सुदृढ़ समाज की रचना में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चे की प्रथम गुरु माँ ही होती है।यह नारी को ही तय करना होगा कि वह पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण न करे, विज्ञापनों की अश्लील सामग्री न बने और अपनी आदर्श परम्पराओं को सहेजते हुए प्रगति पथ पर अग्रसर रहे।तभी सही मायने में नारी स्वतन्त्रता और नारी शशक्तिकरण सम्भव हो पाएगा और कवि पन्त का सपना साकार हो पाएगा जिसकी परिकल्पना करते हुए उन्होंने लिखा था-'नारी-मुख की छवि-किरणों से युग -प्रभात हो द्योतित!'अर्थात आने वाला भारतीय समाज उत्तरोत्तर प्रगतिशील होता चला जाएगा और उसकी प्रगति का प्रत्येक प्रातःकाल नारी- मुखमण्डलरूपी सूर्य की छविमयी किरणों अर्थात बहुमुखी प्रतिभाओं के प्रदर्शन से आलोकित हुआ करेगा।

माधुरी भट्ट पटना

म्हारा दामण

म्हारा दामण लहरै सै
लहर-लहर कै कह रैया सै
सबतै यो न्यारा सै
म्हारा दामण सबतै प्यारा सै.

चेहरा म्हारा लजा रैया सै
लाल-लाल यो हो रैया सै
शरम घणी मनै आवै सै
पिया जी भी लखा रैया सै.

सबकी नजरां तै मैं आगी तंग
दामण मैं मेरे सौ रंग
हूर-परी सी लागूं सूं
छिड़ी गाम मैं म्हारे जंग.

नया मनै दामण पहरैया सै
चाँदी-गोटा लाग रैया सै
सब बार-बार मनै देखै सै
बाहर लिकड़ना मुश्किल होया सै

थारा शुक्र मैं मानूं पिया जी
नया दामण थमनै लाकै दिया जी
उड़ता मैं तो चमकण लागी
जबतै यो दामण लाकै दिया जी

सुरेंद्र सैनी बवानीवाल
"उड़ता झज्जर हरियाणा

बहू बेटी

बेटी घर की शोभा होती है।बेटी से घर रूपी बगिया महकती है। बेटी घर की शान- मान कहलाती है पर बेटी पराया धन भी होती है उसकी शादी होना भी एक वैवाहिक संस्कार है ।बेटी शादी होकर दूसरे घर की शोभा बढ़ाती है, बेटी दूसरे घर जाकर बहू बन जाती है जो गृह लक्ष्मी कहलाती है ।वह एक नहीं दो घर की शोभा होती है। सभी माँ-बाप अपनी बेटियों को, जिगर की टुकड़ियों को, आंख की पुतलियों को बड़े लाड प्यार से पालती हैं ।उसकी सभी इच्छाओं को पूर्ण करते हैं । पुराने समय में तो बेटियों को पढ़ाते ही नहीं थे, यह सोचकर कि उन्हें तो घर संभालना है लेकिन आज सभी माता-पिता शिक्षित व स्वतंत्र विचारों के हैं। आज हर माता-पिता अपनी बेटियों को बेटों के समान ही शिक्षित कर रहे हैं ताकि वह पढ़ लिखकर आत्मनिर्भर बने और अपने घर को सुख-सुविधा पूर्ण बना सकें ।वे केवल घर हीं नहीं बल्कि वे सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में भी योगदान दें ।

आज हम देख रहे हैं कि लड़कियां खेल , संगीत व अन्य सभी कलाओं में निपुण होकर अपने देश का परचम केवल देश में ही नहीं, विदेश में भी फैला रही हैं । इतनी शिक्षा व स्वतंत्र विचारों के बावजूद भी आज हमारा देश दहेज रूपी अभिशाप से मुक्त नहीं हो पाया है।आज पढ़ी-लिखी लड़कियां भी, आत्मनिर्भर लड़कियां भी दहेज दानव का शिकार हो रही है और असमय काल के गर्त में समा रही हैं। विज्ञान ने जितनी सुख सुविधाएं की वस्तुएं दीं। उन सुविधाओं ने लड़कियों का जीवन उतना ही कष्टदायक बना दिया।

माँ बाप बेटी को पढ़ा लिखा कर संस्कारित कर शादी कर देते हैं लेकिन ससुराल वाले दहेज, कार ,बाइक,फ्लैट में अपनी माँग पूरी न होने पर बहू को यातना का शिकार बना देते हैं और एक दिन बेटी दहेज की आग में अपना जीवन ध्वस्त

कर देती है। हर माँ बाप लड़की का पिता है और [illegible] बहू बनाकर नहीं बल्कि बेटी जैसा ही सम्मान् मिले। वह बेटी देता है तो बेटी लेता भी है। वह किसी की बेटी को अपने घर बहू बना कर लाता भी है तो उसका फर्ज है कि वह दूसरी की बेटी को अपनी बेटी जैसा सम्मान दे। आज हमारे समाज में काफी बदलाव आया है । पर्दा प्रथा हमारे समाज से बिल्कुल खत्म हो गया है। संयुक्त परिवार नहीं रहे अब तो एकल परिवार हैं ,हम दो-हमारे दो। माता पिता जब सास-ससुर बनते हैं तो वे भी अपनी बहू को बेटी जैसा दर्जा दे रहे हैं।

प्रायः लड़कियां बहुएँ पढ़ी- लिखी है ,नौकरी कर रही हैं और उन्हें हर तरह सुविधाएँ हैं पर वे लड़कियाँ अपने सास-ससुर को अपने साथ ही रखना नहीं चाहती और न वह सम्मान देती है जो अपने माता- पिता को देती हैं। अगर पुत्रवधू समझदार है ,संस्कारी है तो वह अपने सास-ससुर को सम्मान देती है।

बहुएँ इतना तो जानती हैं कि शादी के बाद ससुराल ही उनका घर होता है जिसे उनके ससुर ने अपने श्रम से सींचकर बनाया है, और उनके ससुर भी चाहते हैं कि वह अपने घर में चौन की साँस ले सकें। लेकिन आज हम देख रहे हैं उच्च शिक्षित माँ - बाप आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर भी वृद्धावस्था में भेज दिए जाते हैं। क्योंकि बेटा जो उनका अपना होता है , वह अपनी पत्नी के कारण विवश हो जाता है और माँ-बाप को साथ नहीं रख पाता और वृद्धा आश्रम की राह दिखा देता है। आजकल एक या दो बेटे होते हैं। अतः सास - ससुर बहू को बेटी जैसा ही प्यार देते हैं , घर के काम के लिए नौकर भी रख देते हैं अगर बहू पढ़ना चाहती हैं तो सास- ससुर पढ़ने के लिए भी प्रेरित करते हैं लेकिन फिर भी अपनी वृद्धावस्था में भी असहाय जैसे हो जाते हैं क्योंकि प्रायः जो बेटी ससुराल आकर अपने माता-पिता के बारे में सोचती है उनकी सुख सुविधा की चिंता करती है। सास ससुर कितने भी योग्य हो ,वे उनकी योग्यता को, उनकी प्रतिष्ठा को और उनकी भावनाओं को एक तरफ कर देती है और यही कारण है कि आज इतनी संख्या में वृद्धा आश्रम हैं । अगर पुत्र वधू समझदार है तो घर स्वर्ग बन जाता है नहीं तो आप कितना भी बहू को बेटी समझ कर प्यार करेंगे ,आपकी अच्छाइयों को अनदेखा कर दिया जायेगा और आपको अपमान के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा । ये तथ्य मैं बड़े शहरों के दे रही हूँ ।.छोटे शहरों में बहू को बेटी जैसा प्यार दिया जाता है तो वे अपने सास- ससुर का सम्मान करती हैं और उनके.बुढापे का सहारा बनकर सेवा करती हैं क्यों कि वे बहू के फर्ज को भारतीय स्ंस्कार को समझती हैं।

1- जहाँ बहुओं को बेटी तुल्य समझा गया।उन्हें अत्यधिक स्वतन्त्रता दी.गई। वहीं माँ-बाप को कष्टों का सामना करना पड़ा।

2- हर पुत्रवधू पहले बेटी होती है । आज शिक्षित होने पर भी अपने सास-ससुर के प्रति अपनतव की भावना नहीं. रख पाती। बेटी ही बहू होती है पर बाबुल की देहरी लांघते ही बेटी अपनी मासूमियत वहीं छोड़ आती हैं। बहू बेटी की तरह होती है लेकिन बहुओं को भी बेटी बनकर सास- ससुर की भावनाओं को समझना होगा।

आशा जाकड़
उज्जैन

भ्रम में भारत

भ्रम के अंधेरे की चारदीवारों के बीच गूंज रहीं हैं भारत और भारतीयता की चीत्कारें संवेदनाओं से परे होकर आधुनिकता की दौड़ में भाग रहा है भारत का बच्चा बच्चा। प्रतिदिन गढ़े जा रहे हैं। प्रगति के नये सोपान।आज का भारत आधुनिकीकरण में लिप्त है वह भौतिकवादी युग की छाया को पकड़ कर बहुत तेजी से अपनी वैचारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व व्यक्तिगत स्थितियों में एक स्तरीय सुधार के लिए प्रयासरत है। इसी आधुनिकीकरण की शैली के तहत हमको पलपल लुभा रही है भौतिक सुविधाओं से भलीभूत होती बाजारवाद की संस्कृति। अब प्रश्न यह उठता है क्या यह आधुनिकता ही हमारे उन्नतिशील होने की परिचायक है? या हम सिर्फ अंधी दौड़ में भाग रहे हैं। हमारे इस स्तरीय जीवन ने बना दिया है हमें गूंगा-बहरा .आखों से देखते हुए भी हम मक्खी की तरह निगल रहे है हर जायज और नाजायज बात को।

आखिर क्यों? क्या हम भ्रम की स्थिति में जी रहे हैं? शायद ! यह सच है ! क्यों कि हम अपने ही चारों ओर बुने गए रेशमी धागों के मकड़जाल से खुद को छुटकारा दिलाना ही नहीं चाहते या कुछ हद तक यह भी संभव है की हम समझ ही नहीं पा रहे हैं की अंधानुकरण की इस दौड़ में हमनें क्या कुछ खोया है और क्या पाया है। अगर हमारी संस्कृति का ह्रास ही हमारा विकास मान लिया जाए तो फिर हमारे पास अपना कहने के लिए क्या बचेगा ? एक दौड़ती भागती जिंदगी!.. एक दूसरे पर घात प्रतिघात करतीं जातियां!. धर्म के नाम पर फैलाया गया आतंकवाद!. बिखरे हुए कुटुंब और परिवार! व्यवहारिक और वैचारिक अश्लीलता!

संकीर्ण मानसिकता लिए मारकाट मचाती हैवानियत! समलेंगिकता के यौनाचार! अथवा अय्याशी में डूबी मदमस्त जवानियाँ!

क्या यही थी हमारे भारत की पहचान? कहाँ खो गया है हमारा विश्व गुरु भारत? कहाँ खो गई है हमारी "वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति, एक दूसरे के धर्म के प्रति सम्मान और आस्थाएं, आपसी प्रेम , भाई चारा व मर्यादाएं कहाँ दिखतीं है अब ? आखिर कैसे बदल गया सब कुछ? क्यों और कैसे बदल गई भारत की पावन, पवित्र गंगा की तस्वीर, कैसे बदल गई अडिग हिमालय से गूँजती वेद चर्चाओं की स्वर लहरियां कब और कब विषाक्त हवाओं में तब्दील हो गई वो पता ही नहीं चला ! क्या यह वही भारत है ?. .जिसकी पहचान सदा से अनेकता में एकता से होती थी । जहाँ से वेदों की ध्वनियों का उच्चारण चलता रहता था .नारी सीता की तरह पवित्र और पुरूष राम की तरह मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाते थे।आज उसी भारत की संतानें .अपने मद में चूर आधुनिकीकरण की सीढियां चढ़ते हुए अपनी वास्तविक पहचान खोती जा रहीं है ।हमारा भारत इस समय एक साथ कई संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ गया है ।आज जरूरत है हमारे युवाओं को अपनी आंखों से भ्रम की पट्टी उतार कर आधुनिकीकरण के सही रूप और स्वरूप को समझने की. अपने वैचारिक भटकाव को सही दिशा देने की.राजनीति और राजनीतिज्ञों के छद्म भेष को जानने की। आज भृष्टाचार में लिप्त शासक वर्ग हमारे दिलो-दिमाग पर अपनी माया का ऐसा जादू इस कदर बिखेर रहा है की हम अपनी एकता और अखंडता

को भूलकर अलग अलग खेमों में बंटते जा रहे हैं। और वो बन्दरष्की तरह हमारी रोटी खा रहे है । हम मूर्ख बिल्लियों की तरह भूखे पेट सड़कों पर उतर कर अपने लिए नहीं. उनके लिए मारकाट कर रहे है।

आखिर क्यों ? हमने भृष्टाचार को ही अपनी जरूरतें पूरा करने का सबसे सरल और सहयोगपूर्ण तरीका मान लिया है। जिस स्थिति में बेईमानी करके काम निकालने वाला और काम करने वाला दोनों ही ,खुश रहते है। आज हम देखेंगे तो पायेंगे हमारे खून में ईमानदारी महज दिखावे मात्र के लिए रह गई है। कितना आश्चर्यजनक सच है की हर व्यक्ति ईमानदार है फिर भी हमारे देश में चहुँओर बेईमानी का साम्राज्य है।नैतिकता का पतन बहुत तेजी से होता जा रहा है।

परिवारवाद के मूल्य दिन प्रतिदिन खत्म होते जा रहे है। तो क्या शिक्षा ने हमको संवेदनहीन बना दिया है? अथवा हम खुद ही शिक्षित होने के वास्तविक स्वरूप को समझ नहीं पाये हैं।एक उच्च शिक्षित व्यक्ति को वेहद सौम्य और संतुलित होना चाहिए उसे अच्छाइयों और बुराइयों की परख एक अनपढ़ व्यक्ति की अपेक्षा ज्यादा अच्छे से होना चाहिये किन्तु इसके पलट हम देखते हैं।

पढ़े लिखे व्यक्ति या बच्चे चाहे लड़के हों या लड़कियां बत्तमीज और बदमिजाज हो रहे हैं,तोड़ रहे हैं उन रिश्तो की कड़ियों को जो पहले हमारे लिए बेमिसाल हुआ करते थे । आज के बच्चों के लिए वो रिश्ते-नाते मूल्य हीन से हो गए हैं।रह गए है अपनी अपनी जिम्मेदारियों का भार ढ़ोते एकल परिवार। भ्रम बस जिसको हम अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता मान बैठे है वही हमारी भारतीय संस्कृति को नष्ट कर रही है। अगर हम राजनैतिक क्षेत्र में देखें तो पहले राजनीति में लोग एक समर्पण भाव के साथ आते थे आज राजनीति जुए के अड्डे की तरह हो गई है बोलियों के हिसाब से बिकतीं हैं पार्टियाँ! अपने शब्दों के माया जाल से आम जनता को करतीं हैं भ्रमित रोज नई-नई घोषणाएं सिर्फ हवा में सैर ज्यादा करतीं है और जनता का भला कम करतीं है।

सत्ता के नशे में चूर भारत के नेता भूल जाते हैं की उनका सबसे पहला कर्तव्य अपने देश का हित करना और जनमानस की सेवा करना है ना की देश को और देश की जनता को टुकड़ों में विभक्त करना? पर आज के नेता हमारे देश का ओर दिलों का विभक्तिकरण करने में अपनी पूरी ताकत से जुटे हुए है ,वह बढ़ा रहे है मन भेद और तोड़ रहे हैं देश। भ्रम का यह दरिया पार करना हमारे लिए असंभव है क्यों कि मगरमच्छ और बगुले हंस का भेष बदलकर घूम रहे हैं।और असली हंस ढूढ़ने पर भी नहीं मिल रहे,धर्म के ठेकेदार बने लोग कामयाब हो रहे है धार्मिक मतभेद को बढ़ावा देने में।जिसमें घुटघुटाकर मर गए हैं यहीं कहीं इंसानियत के प्रेम बीज,और तेजी से बढ़ रही है विषबेल अपनी पूरी हरियाली के साथ।

जातिगत द्वेष की बिछी है विसात खेली जा रहीं हैं शतरंज की चालें हमारे देश को तोड़ने के लिए।कुकुरमुत्तों की तरह उग आए सामाजिक संगठन अपना भला ज्यादा और जरूरतमंद का भला कम कर रहे हैं।पता नहीं क्यों हमारी लोलुपता खत्म होने का नांम ही नहीं ले रही है।बेशक हम दिखावे की दुनियाँ में कदम रख चुके है जहाँ पूरी तरह से प्यार और अपनेपन का झूठा दिखावा रह गया है। यद्यपि पश्चिमी देशों में हमारी पुरानी संस्कृति का जीर्णोद्धार करके हमारी सभ्यता संस्कृति को अपना बताकर सहज जीवन जीने के मंत्र सिखाये जा रहे है विदेशों में कर रहे है लोग. हमारी सभ्यता संस्कृति और पुराणों का गहन अध्ययन और हमारे भारत में लोप होते जा रहे हैं हमारे वेद-पुराण नहीं कराया जा रहा

बच्चों को उनका अध्ययन बल्कि उनके स्वरूप की बदलने की कोशिश की जा रही है। परोसी जा रही है हमारे बच्चों के सामने अश्लीलता जिसे हम आधुनिकीकरण की चादर में लपेटकर ओढ़ रहे हैं।

निःसन्देह हमारा देश अन्य देशों के सामने आर्थिक रूप से सशक्त, सुशिक्षित भारत के रूप में उभर कर अपनी एक विशिष्ट पहचान बना रहा है आज उसकी ताकत का लोहा वैश्विक स्तर पर माना जाता है।किन्तु इसी के साथ यह भी तो सच है की कहीं ना कहीं टूट रहा है।

भारत,दरक रहा है अंदर से हमारी संस्कृति,मरुभूमि की तरह तृषित है भारत माँ अपनी संतान के स्नेह से पल्लवित होने को! क्या खूब बात होती! अगर इस बेजोड़ होते आधुनिक भारत की बुनियाद.हमारी पुरानी सभ्यता ,संस्कृति ,मानवीय - संवेदनाओं व हमारे आपसी सौहार्द को बलि दिए बिना ही की जाती. तो हमारे देश की संस्कृति की खुशबू चन्दन सी भीनी-भीनी सुगन्ध की तरह सारी दुनियाँ में फैली होती।जो हमारे लिए शर्म का नहीं बल्कि गर्व का कारण होती हमारी अपनी एक अलग पहचान होती और तब हमारी भारत और भारतीयता की विश्व स्तर पर पूजी जाती।

रेखा दुबे
तिरुपति पैलेस
विदिशा

मेरा गाँव

दिल तो मेरा गाँव में है ।
गाँव में मेरे माँ - बाबूजी
रहते ठंढी छाँव में हैं
दिल तो मेरा गाँव में है ।

शहर बहुत बीमार हुआ है
घर -घर सब लाचार हुआ है
पार्क भी खुशी विहीन हुआ है
बिल्डिंग मेरा सील हुआ है
पर चिन्ता नहीं अपनी मुझको
मेरा सुख -दुख माँ में है
दिल तो मेरा गाँव में है ।

सुन लो मेरे शहर के भाई
चाहो अगर गाँव की भलाई
मेरे जैसे तुम यहीं रहो
माँ खुश होंगी कहीं रहो
गाँव का हाल भी बुरा हुआ
अब तक तो माँ ठांव में हैं
दिल तो मेरा गाँव में है ।

मैं खुश रहती माँ खुश होती
मैं रोती तो माँ भी रोती
पास स्नेह से सिंचित करती
दूर भी रहकर आशीष देती
तीनों जहाँ की खुशियाँ मुझको
मिलती माँ के पाँव में है
दिल तो मेरा गाँव में है ।

प्रतिभा स्मृति
दरभंगा बिहार

कन्यापूजन

जब से मंगत सेठ को पता चला कि वो पिता बनने वाले हैं, उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्होंने तो जश्न की तैयारी भी शुरू कर दी क्योंकि बहुत मन्नतों के बाद उनके कुलदीपक का जन्म होने वाला था। फिर भी उन्होंने डाक्टर से जाँच करा लेना उचित समझा। जाँच में डाक्टर ने बताया कि आपकी होने वाली संतान लड़की है।सारी खुशियाँ आने से पहले ही दगा दे गयीं। तुरंत फैसला ले लिया गया। उस बालिका को जागने से पहले ही सुला दिया गया। खैर, समय बीतने के साथ ही वह शुभ घड़ी भी आयी जिसका सेठ जी को इंतजार था। उनके घर कुलदीपक का जन्म हुआ। पंडित जी ने कुंडली बनाई और बच्चे के जीवन में आने वाली कठिनाइयों के निवारण हेतु नवरात्रि व्रत और उसके समाप्ति पर नौ कन्याओं के पूजन करने को कहा। कुलदीपक के भविष्य को उज्जवल बनाने हेतु सेठ जी ने नवरात्रि का व्रत रखा और आज सेठ जी ने नौ कन्याओं को भोजन कराया। उनके पैर धोकर चरणामृत अपने पूरे परिवार समेत कुलदीपक को पिलाया । उन्हें दान देकर विदा किया। कन्या पूजन संपन्न हुई और सेठ जी आज चिन्ता मुक्त हो गयें।।

अनूप कुमार शुक्ल गाजीपुर

मोर मेहरारू

चौका बरतन कुल कर सुतली
उठे में तनकी देर भईल
भोरे भोरे मेहरी आ के
लस्सी नीयन फेंट गईल स

फोन लगवली अधिकारी के
साहेब ई का अंधेर भईल
सबसे बड़की बेमारी त
हमरा घरही में फइल गईल स

बहुत भईल इ ल,कडाउन अब
साहेब जल्दी बुलवाई।
अइसन न हो ये साहेब हम
खटते खटते मरि जाई स

ओहर से हमरे साहेब के
सुनी का जवाब मिलल।
झाड़ू पोंछा करत बानी हो
खाये के ना कबाब मिलल

साहेब क इ बात साहिल के
दिल के अंदर बेंध गईल
कोरोना के फेर में देखी
मरदन के का हाल भईल सस

संतोष साहिल, गाजीपुर की कलम से

संस्कृत भाषा का महत्त्व

संस्कृत में 1700 धातुएं, 70 प्रत्यय और 80 उपसर्ग हैं, इनके योग से जो शब्द बनते हैं, उनकी संख्या 27 लाख 20 हजार होती है। यदि दो शब्दों से बने सामासिक शब्दों को जोड़ते हैं तो उनकी संख्या लगभग 769 करोड़ हो जाती है।'

संस्कृत इंडो-यूरोपियन लैंग्वेज की सबसे प्राचीन भाषा है और सबसे वैज्ञानिकभाषा भी है। इसके सकारात्मक तरंगों के कारण ही ज्यादातर श्लोक संस्कृत में हैं। भारत में संस्कृत से लोगों का जुड़ाव खत्म हो रहा है लेकिन विदेशों में इसके प्रति रुझाान बढा है।

ब्रह्मांड में सर्वत्र गति है। गति के होने से ध्वनि प्रकट होती है । ध्वनि से शब्द परिलक्षित होते हैं और शब्दों से भाषा का निर्माण होता है। आज अनेकों भाषायें प्रचलित हैं । किन्तु इनका काल निश्चित है कोई सौ वर्ष, कोई पाँच सौ तो कोई हजार वर्ष पहले जन्मी। साथ ही इन भिन्न भिन्न भाषाओं का जब भी जन्म हुआ, उस समय अन्य भाषाओं का अस्तित्व था।

अतः पूर्व से ही भाषा का ज्ञान होने के कारण एक नयी भाषा को जन्म देना अधिक कठिन कार्य नहीं है। किन्तु फिर भी साधारण मनुष्यों द्वारा साधारण रीति से बिना किसी वैज्ञानिक आधार के निर्माण की गयी सभी भाषाओं मे भाषागत दोष दिखते हैं । ये सभी भाषाए पूर्ण शुद्वता,स्पष्टता एवं वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। क्योंकि ये सिर्फ और सिर्फ एक दूसरे की बातों को समझने के साधन मात्र के उद्देश्य से बिना किसी सूक्ष्म वैज्ञानिकीय चिंतन के बनाई गयी। किन्तु मनुष्य उत्पत्ति के आरंभिक काल में, धरती पर किसी भी भाषा का अस्तित्व न था। तो सोचिए किस प्रकार भाषा का निर्माण संभव हुआ होगा?

शब्दों का आधार ध्वनि है, तब ध्वनि थी तो स्वाभाविक है शब्द भी थे। किन्तु व्यक्त नहीं हुये थे, अर्थात उनका ज्ञान नहीं था। प्राचीन रिषियों ने मनुष्य जीवन की आत्मिक एवं लौकिक उन्नति व विकास में शब्दो के महत्व और शब्दों की अमरता का गंभीर आकलन किया । उन्होने एकाग्रचित्त हो ध्वानपूर्वक, बार बार मुख से अलग प्रकार की ध्वनियाँ उच्चारित की और ये जानने में प्रयासरत रहे कि मुख-विवर के किस सूक्ष्म अंग से ,कैसे और कहाँ से ध्वनि जन्म ले रही है। तत्पश्चात निरंतर अथक प्रयासों के फलस्वरूप उन्होने परिपूर्ण, पूर्ण शुद्व,स्पष्ट एवं अनुनाद क्षमता से युक्त ध्वनियों को ही भाषा के रूप में चुना । सूर्य के एक ओर से 9 रश्मिया निकलती हैं और सूर्य के चारो ओर से 9 भिन्न भिन्न रश्मियों के निकलने से कुल निकली 36 रश्मियों की ध्वनियों पर ' संस्कृत के 36 स्वर बने और इन 36 रश्मियो के पृथ्वी के आठ वसुओ से टकराने से 72 प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती हैं । जिनसे संस्कृत के 72 व्यंजन बने। इस प्रकार ब्रह्माण्ड से निकलने वाली कुल 108 ध्वनियों पर संस्कृत की वर्णमाला आधारित है'। ब्रह्मांड की इन ध्वनियों के रहस्य का ज्ञान वेदों से मिलता है। इन ध्वनियों को नासा ने भी स्वीकार किया है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन रिषि मुनियों को उन ध्वनियों का ज्ञान था और उन्ही ध्वनियों के आधार पर उन्होने पूर्णशुद्व भाषा को अभिव्यक्त किया। 'अतः प्राचीनतम आर्यभाषा जो ब्रह्मांडीय संगीत थी उसका नाम 'संस्कृत' पड़ा। संस्कृत संस्. कृत् अर्थात् श्वासों से निर्मित अथवा साँसो से बनी एवं स्वयं से कृत, जो कि)षियों के ध्यान लगाने व परस्पर संपर्क से अभिव्यक्त हुयी।

कालांतर में पाणिनि ने नियमित व्याकरण के द्वारा संस्कृत को परिष्कृत एवं सर्वम्य प्रयोग में आने योग्य रूप प्रदान किया। पाणिनीय व्याकरण ही संस्कृत का प्राचीनतम व सर्वश्रेष्ठ व्याकरण है। दिव्य व दैवीय गुणों से युक्त, अतिपरिष्कृत, परमार्जित, सर्वाधिक व्यवस्थित, अलंकृत सौन्दर्य से युक्त, पूर्ण समृद्ध व सम्पन्न, पूर्ण वैज्ञानिक देववाणी संस्कृत मनुष्य की आत्मचेतना को जागृत करने वाली, सात्विकता में वृद्धि , बुद्धि व आत्म बल प्रदान करने वाली सम्पूर्ण विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है'। अन्य सभी भाषाओ में त्रुटि होती है पर इस भाषा में कोई त्रुटि नहीं है। इसके उच्चारण की शुद्धता को इतना सुरक्षित रखा गया कि सहस्त्रों वर्षो से लेकर आज तक वैदिक मन्त्रों की ध्वनियों व मात्राओं में कोई पाठ भेद नहीं हुआ और ऐसा सिर्फ हम ही नहीं कह रहे बल्कि विश्व के आधुनिक विद्वानों और भाषाविदों ने भी एक स्वर में संस्कृत को पूर्ण वैज्ञानिक एवं सर्वश्रेष्ठ माना है।

संस्कृत की सर्वोत्तम शब्द-विन्यास युक्ति के, गणित के, कंप्यूटर आदि के स्तर पर नासा व अन्य वैज्ञानिक व भाषा विद संस्थाओं ने भी इस भाषा को एकमात्र वैज्ञानिक भाषा मानते हुये इसका अध्ययन आरंभ कराया है' और भविष्य में भाषा-क्रांति के माध्यम से आने वाला समय संस्कृत का बताया है।

अतः अंग्रेजी बोलने में बड़ा गौरव अनुभव करने वाले, अंग्रेजी में गिटपिट करके गुब्बारे की तरह फूल जाने वाले कुछ महाशय जो संस्कृत में दोष गिनाते हैं उन्हें कुँए से निकलकर संस्कृत की वैज्ञानिकता का एवं संस्कृत के विषय में विश्व के सभी विद्वानों का मत जानना चाहिए।

'नासा की वेबसाईट पर जाकर संस्कृत का महत्व पढ़ें।' 'काफी शर्म की बात है कि भारत की भूमि पर ऐसे लोग हैं जिन्हें अमृतमयी वाणी संस्कृत में दोष और विदेशी भाषाओं में गुण ही गुण नजर आते हैं वो भी तब जब विदेशी भाषा वाले संस्कृत को सर्वश्रेष्ठ मान रहे हैं'।

अतः जब हम अपने बच्चों को कई विषय पढ़ा सकते हैं तो संस्कृत पढ़ाने में संकोच नहीं करना चाहिए। देश विदेश में हुये कई शोधो के अनुसार संस्कृत मस्तिष्क को काफी तीव्र करती है जिससे अन्य भाषाओं व विषयों को समझने में काफी सरलता होती है ,साथ ही यह सत्वगुण में वृद्धि करते हुये नैतिक बल व चरित्र को भी सात्विक बनाती है। अतः सभी को यथा योग्य संस्कृत का अध्ययन करना चाहिए।

आज दुनिया भर में लगभग 6900 भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इन भाषाओं की जननी कौन है? 'दुनिया की सबसे पुरानी भाषा है संस्कृत भाषा' ।

आइये जाने संस्कृत भाषा का महत्वः-

संस्कृत भाषा के विभिन्न स्वरों एवं व्यंजनों के विशिष्ट उच्चारण स्थान होने के साथ प्रत्येक स्वर एवं व्यंजन का उच्चारण व्यक्ति के सात ऊर्जा चक्रों में से एक या एक से अधिक चक्रों को निम्न प्रकार से प्रभावित करके उन्हें क्रियाशील उर्जीकृत करता है ।मूलाधार चक्र स्वर ''अ'' एवं क वर्ग का उच्चारण मूलाधार चक्र पर प्रभाव डाल कर उसे क्रियाशील एवं सक्रिय करता है।

स्वर ''१'' तथा च वर्ग का उच्चारण स्वाधिष्ठान चक्र को उर्जीकृत करता है। स्वर“)” तथा ट वर्ग का उच्चारण मणिपूरक चक्र को सक्रिय एवं उर्जीकृत करता है। स्वर “लृ” तथा त वर्ग का उच्चारण अनाहत चक्र को प्रभावित करके उसे उर्जीकृत एवं सक्रिय करता है।

स्वर “उ” तथा प वर्ग का

उच्चारण विशुद्ध चक्र को प्रभावित करके उसे सक्रिय करता है। ईषत् स्पृष्ट वर्ग का उच्चारण मुख्य रूप से आज्ञा चक्र एवं अन्य चक्रों को सक्रियता प्रदान करता है। ईषत् विवृत वर्ग का उच्चारण मुख्य रूप से सहस्त्राधार चक्र एवं अन्य चक्रों को सक्रिय करता है।

इस प्रकार देवनागरी लिपि के प्रत्येक स्वर एवं व्यंजन का उच्चारण व्यक्ति के किसी न किसी उर्जा चक्र को सक्रिय करके व्यक्ति की चेतना के स्तर में अभिवृद्धि करता है। वस्तुतः ' संस्कृत भाषा का प्रत्येक शब्द इस प्रकार से संरचित किया गया है कि उसके स्वर एवं व्यंजनों के मिश्रण का उच्चारण करने पर वह हमारे विशिष्ट ऊर्जा चक्रों को प्रभावित करे'। प्रत्येक शब्द स्वर एवं व्यंजनों की विशिष्ट संरचना है जिसका प्रभाव व्यक्ति की चेतना पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। इसी लिये कहा गया है कि व्यक्ति को शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ बहुत सोच-समझ कर बोलना चाहिए। शब्दों में शक्ति होती है जिसका दुरूपयोग एवं सदुपयोग स्वयं पर एवं दूसरे पर प्रभाव डालता है। शब्दों के प्रयोग से ही व्यक्ति का स्वभाव, आचरण, व्यवहार एवं व्यक्तित्व निर्धारित होता है।

उदाहरणार्थ जब "राम" शब्द का उच्चारण किया जाता है है तो हमारा अनाहत चक्र जिसे ह्रदय चक्र भी कहते है सक्रिय होकर उर्जीकृत होता है। कृष्ण का उच्चारण मणिपूरक चक्र नाभि चक्र को सक्रिय करता है। "सोह्म" का उच्चारण दोनों श्अनाहतश एवं "मणिपूरक" चक्रों को सक्रिय करता है।

वैदिक मंत्रो को हमारे मनीषियों ने इसी आधार पर विकसित किया है। प्रत्येक मन्त्र स्वर एवं व्यंजनों की एक विशिष्ट संरचना है। इनका निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार शद्ध उच्चारण ऊर्जा चक्रों को सक्रिय करने के साथ साथ मष्तिष्क की चेतना को उच्चीकृत करता है। उच्चीकृत चेतना के साथ व्यक्ति विशिष्टता प्राप्त कर लेता है और उसका कहा हुआ अटल होने के साथ-साथ अवश्यम्भावी होता है। शायद आशीर्वाद एवं श्राप देने का आधार भी यही है। संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता एवं सार्थकता इस तरह स्वयं सिद्ध है।

' भारतीय शास्त्रीय संगीत के सातों स्वर हमारे शरीर के सातों उर्जा चक्रों से जुड़े हुए हैं' । प्रत्येक का उच्चारण सम्बंधित उर्जा चक्र को क्रियाशील करता है। शास्त्रीय राग इस प्रकार से विकसित किये गए हैं जिससे उनका उच्चारण गायन विशिष्ट उर्जा चक्रों को सक्रिय करके चेतना के स्तर को उच्चीकृत करे। प्रत्येक राग मनुष्य की चेतना को विशिष्ट प्रकार से उच्चीकृत करने का सूत्र है। इनका सही अभ्यास व्यक्ति को असीमित ऊर्जावान बना देता है।

' संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा है इसीलिए इसका नाम संस्कृत है। संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योग शास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है।' यही इस भाषा का रहस्य है । जिस प्रकार साधारण पकी हुई दाल को शुध्द घी में जीराय मैथीय लहसुनय और हींग का तड़का लगाया जाता है तो उसे संस्कारित दाल कहते हैं। घीय जीराय लहसुन, मैथी य हींग आदि सभी महत्वपूर्ण औषधियाँ हैं। ये शरीर के तमाम विकारों को दूर करके पाचन संस्थान को दुरुस्त करती है।दाल खाने वाले व्यक्ति को यह पता ही नहीं चलता कि वह कोई कटु औषधि भी खा रहा हैय और अनायास ही आनन्द के साथ दाल खाते-खाते इन औषधियों का लाभ ले लेता है। ठीक यही

बात संस्कारित भाषा संस्कृत के साथ सटीक बैठती है। जो भेद साधारण दाल और संस्कारित दाल में होता है यवैसा ही भेद अन्य भाषाओं और संस्कृत भाषा के बीच है।

' संस्कृत भाषा में वे औषधीय तत्व क्या है ?'

यह विश्व की तमाम भाषाओं से संस्कृत भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है। चार महत्वपूर्ण विशेषताएँः- 1. अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः)ः संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण और लाभदायक व्यवस्था है, अनुस्वार और विसर्ग। पुल्लिंग के अधिकांश शब्द विसर्गान्त होते हैं -यथा- रामः बालकः हरिः भानुः आदि। नपुंसक लिंग के अधिकांश शब्द अनुस्वारान्त होते हैं-यथा- जलं वनं फलं पुष्पं आदि।

विसर्ग का उच्चारण और कपालभाति प्राणायाम दोनों में श्वास को बाहर फेंका जाता है। अर्थात् जितनी बार विसर्ग का उच्चारण करेंगे उतनी बार कपालभाति प्रणायाम अनायास ही हो जाता है। जो लाभ कपालभाति प्रणायाम से होते हैं, वे केवल संस्कृत के विसर्ग उच्चारण से प्राप्त हो जाते हैं। उसी प्रकार अनुस्वार का उच्चारण और भ्रामरी प्राणायाम एक ही क्रिया है । भ्रामरी प्राणायाम में श्वास को नासिका के द्वारा छोड़ते हुए भवरे की तरह गुंजन करना होता है और अनुस्वार के उच्चारण में भी यही क्रिया होती है। अतः जितनी बार अनुस्वार का उच्चारण होगा , उतनी बार भ्रामरी प्राणायाम स्वतरू हो जायेगा । जैसे हिन्दी का एक वाक्य लें- "राम फल खाता है" इसको संस्कृत में बोला जायेगा- "रामः फलं खादति" राम फल खाता है ,यह कहने से काम तो चल जायेगा ,किन्तु रामरू फलं खादति कहने से अनुस्वार और विसर्ग रूपी दो प्राणायाम हो रहे हैं। यही संस्कृत भाषा का रहस्य है। संस्कृत भाषा में एक भी वाक्य ऐसा नहीं होता जिसमें अनुस्वार और विसर्ग न हों। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृत बोलना अर्थात् चलते फिरते योग साधना करना होता है ।

2.शब्द-रूपः- संस्कृत की दूसरी विशेषता है शब्द रूप। 'विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक ही रूप होता है,जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 25 रूप होते हैं'। जैसे राम शब्द के निम्नानुसार 25 रूप बनते हैं- यथारू- रम् (मूल धातु)-रामरू रामौ रामारूयरामं रामौ रामान् यरामेण रामाभ्यां रामैरूय रामाय रामाभ्यां रामेभ्यरू यरामात् रामाभ्यां रामेभ्यरूय रामस्य रामयोरू रामाणांय रामे रामयोरू रामेषु यहे राम ! हे रामौ ! हे रामा रू ।ये 25 रूप सांख्य दर्शन के 25 तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जिस प्रकार पच्चीस तत्वों के ज्ञान से समस्त सृष्टि का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वैसे ही संस्कृत के पच्चीस रूपों का प्रयोग करने से आत्म साक्षात्कार हो जाता है और इन '25 तत्वों की शक्तियाँ संस्कृतज्ञ को प्राप्त होने लगती है। सांख्य दर्शन के 25 तत्व निम्नानुसार हैं -आत्मा (पुरुष), (अंतःकरण 4) मन बुद्धि चित्त अहंकार, (ज्ञानेन्द्रियाँ 5) नासिका जिह्वा नेत्र त्वचा कर्ण, (कर्मेन्द्रियाँ 5) पाद हस्त उपस्थ पायु वाक, (तन्मात्रायें 5) गन्ध रस रूप स्पर्श शब्द,(महाभूत 5) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश।'

3.द्विवचनः- ' संस्कृत भाषा की तीसरी विशेषता है द्विवचन'। सभी भाषाओं में एक वचन और बहुवचन होते हैं जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है। इस द्विवचन पर ध्यान दें तो पायेंगे कि यह द्विवचन बहुत ही उपयोगी और लाभप्रद है। जैसे राम शब्द के द्विवचन में निम्न रूप बनते हैं- रामौ , रामाभ्यां और रामयोरू। इन तीनों शब्दों के उच्चारण करने से योग के क्रमशः मूलबन्ध ,उड्डियान बन्ध और जालन्धर बन्ध लगते हैं, जो योग की बहुत ही महत्वपूर्ण क्रियायें हैं।

4. सन्धिः- ' संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है सन्धि'। संस्कृत में जब दो शब्द पास में आते हैं तो वहाँ सन्धि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाता है। उस बदले हुए उच्चारण में जिह्वा आदि को कुछ विशेष प्रयत्न करना पड़ता है।ऐसे सभी प्रयत्न एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति के प्रयोग हैं।ष्इति अहं जानामिष इस वाक्य को चार प्रकार से बोला जा सकता है, और हर प्रकार के उच्चारण में वाक् इन्द्रिय को विशेष प्रयत्न करना होता है।

यथारू- 1 इत्यहं जानामि। 2 अहमिति जानामि। 3 जानाम्यहमिति । 4 जानामीत्यहम्। इन सभी उच्चारणों में विशेष आभ्यंतर प्रयत्न होने से एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति का सीधा प्रयोग अनायास ही हो जाता है। जिसके फल स्वरूप मन बुद्धि सहित समस्त शरीर पूर्ण स्वस्थ एवं निरोग हो जाता है। इन समस्त तथ्यों से सिद्ध होता है कि संस्कृत भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान की भाषा ही नहीं ,अपितु मनुष्य के सम्पूर्ण विकास की कुंजी है। यह वह भाषा है, जिसके उच्चारण करने मात्र से व्यक्ति का कल्याण हो सकता है। इसीलिए इसे रुदेवभाषा और अमृतवाणी कहते हैं। संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यंत परिमार्जित एवं वैज्ञानिक है। संस्कृत के एक वैज्ञानिक भाषा होने का पता उसके किसी वस्तु को संबोधन करने वाले शब्दों से भी पता चलता है। इसका हर शब्द उस वस्तु के बारे में, जिसका नाम रखा गया है, के सामान्य लक्षण और गुण को प्रकट करता है। ऐसा अन्य भाषाओं में बहुत कम है। पदार्थो के नामकरण ऋषियों ने वेदों से किया है और वेदों में यौगिक शब्द हैं और हर शब्द गुण आधारित हैं ।

इस कारण संस्कृत में वस्तुओं के नाम उसका गुण आदि प्रकट करते हैं। जैसे हृदय शब्द। हृदय को अंगेजी में हार्ट कहते हैं और संस्कृत में हृदय कहते हैं।

अंग्रेजी वाला शब्द इसके लक्षण प्रकट नहीं कर रहा, लेकिन ' संस्कृत शब्द' इसके लक्षण को प्रकट कर इसे परिभाषित करता है। 'बृहदारण्यकोपनिषद 5.3.1 में हृदय शब्द का अक्षरार्थ' इस प्रकार किया है- तदेतत् र्त्यक्षर हृदयमिति, हृ इत्येकमक्षरमभिहरित, द इत्येकमक्षर ददाति, य इत्येकमक्षरमिति।

अर्थात हृदय शब्द हृ, हरणे द दाने तथा इण् गतौ इन तीन धातुओं से निष्पन्न होता है। हृ से हरित अर्थात शिराओं से अशुद्ध रक्त लेता है, द से ददाति अर्थात शुद्व करने के लिए फेफड़ों को देता है और य से याति अर्थात सारे शरीर में रक्त को गति प्रदान करता है। इस सिद्वांत की 'खोज हार्वे ने 1922 में की थी,' जिसे 'हृदय शब्द' स्वयं 'लाखों वर्षो' से उजागर कर रहा था ।

संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के कई तरह से शब्द रूप बनाए जाते, जो उन्हें व्याकरणीय अर्थ प्रदान करते हैं। अधिकांश शब्द-रूप मूल शब्द के अंत में प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। इस तरह यह कहा जा सकता है कि संस्कृत एक बहिर्मुखी-अंतःश्लिष्टयोगात्मक भाषा है। ' संस्कृत के व्याकरण को महापुरुषों ने वैज्ञानिक' स्वरूप प्रदान किया है। संस्कृत भारत की कई लिपियों में लिखी जाती रही है, लेकिन आधुनिक युग में देवनागरी लिपि के साथ इसका विशेष संबंध है। देवनागरी;लिपि वास्तव में संस्कृत के लिए ही बनी है! इसलिए इसमें 'हरेक चिन्ह' के लिए 'एक और केवल एक ही ध्वनि है।'

'देवनागरी में 13 स्वर और 34 व्यंजन हैं'। ''संस्कृत' केवल स्वविकसित भाषा नहीं, बल्कि 'संस्कारित भाषा' भी है, अतः 'इसका नाम संस्कृत है। केवल संस्कृत ही एकमात्र

भाषा है, जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नहीं किया गया है। 'संस्कृत को संस्कारित' करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद नहीं, बल्कि 'महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योगशास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं।'

' विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का प्रायः एक ही रूप होता है, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 27 रूप होते हैं। सभी भाषाओं में' एकवचन और बहुवचन होते हैं, जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है। संस्कृत भाषा की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है संधि। ' संस्कृत में जब दो अक्षर' निकट आते हैं, तो वहां संधि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाता है। 'इसे शोध में कम्प्यूटर अर्थात कृत्रिम बुद्धि' के लिए सबसे 'उपयुक्त भाषा सिद्व हुई है' और यह भी पाया गया है कि ' संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।'

' संस्कृत ही एक मात्र साधन है, जो क्रमशः अंगुलियों एवं जीभ को लचीला बनाती है।' इसके अध्ययन करने वाले छात्रों को गणित, विज्ञान एवं अन्य भाषाएं ग्रहण करने में सहायता मिलती है। वैदिक ग्रंथों की बात छोड़ भी दी जाए, तो भी संस्कृत भाषा में साहित्य की रचना कम से कम छह हजार वर्षो से निरंतर होती आ रही है। ' संस्कृत केवल एक भाषा' मात्र नहीं है, अपितु एक विचार भी है। ' संस्कृत एक भाषा मात्र नहीं, बल्कि एक संस्कृति है और संस्कार भी है ।' संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है, सहयोग है और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना भी !

डॉ नीतू शर्मा'
एसोशिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग, आई टी पी जी महाविद्यालय,लखनऊ

कबाड़

शर्मा जी बेहद खुश थे उनके पैर मानो जमीन पर ही नही टिक रहे हो ..और हो भी कयो नही उनके इकलौते बेटे रमेश का सीधे अफसर की पोस्ट पर सिलेक्शन जो हुआ था नया घर मिला वो भी हाईफाई सोसायटी मे थ्री बी एचके वरना अबतक तो शर्माजी किराए के मकान मे धक्के खा रहे थे ऐसा नही की उन्होंने कभी अपना मकान नही बनाया था ।

बनाया था मगर बेटे रमेश को बडा अफसर बनाने मे उसकी अच्छी पढाई और जरुरतों के लिए बेच दिया तमाम संघर्ष किए इस बीच पत्नी का साथ भी छुट गया मगर हिम्मत नही हारी और बुढापे मे गार्ड की नौकरी भी की जिसकी बदौलत आज उनका सपना पूरा हो रहा था।

बहु और दो मजदूरों सहित पूरे घर मे समान बखूबी जमा दिया सचमुच घर एक मंदिर की तरह लग रहा था आखिर थ्री बीएचके मे से एक कमरा उनके लिए भी था दोपहर को रमेश आफिस से लंच करने के लिए घर लौटा तो घर को करीने से सजा देख खुदपर नाज करने लगा। कहा किराए का छोटा सा मकान और कहा सभी कमरे बडे बडे । फिर उसने पूरे घर का मुआयना किया अपना और पत्नी का कमरा देखा फिर किचन और साथ मे बना स्टोर रुम जिसमें तमाम कबाड़ का समान भरा हुआ था ताकि घर मे आलतू फालतू समान दिखाई ना दे फिर बेडरूम गेस्ट रुम और बडा सा हाल देखा आखिर मे पत्नी को बुलाकर बोला-सुनो ...इस स्टोर रुम से ये कबाड़ बाहर निकालो इसे बेचो फेको जो मर्जी करो मुझे ये खाली चाहिए पत्नी ने हैरानी से वजह पूछी तो रमेश बोला-इसमें पिताजी की चारपाई बिछाकर उनके रहने की जगह बनानी है अब बुढापे मे उनके लिए बडे कमरे की कया जरूरत और जिस कमरे मे पिताजी है उसे मे अपना रीडिंग रूम बनाऊंगा सकून से अपना आफिस का काम करूगां इसके दो फायदे एक तो मुझे कोई डिस्टर्ब नही होगा दूसरे तुम अपने पर्सनल कमरें जो चाहे करो जैसे मर्जी अकेले रहो दोनों पति पत्नी मुसकराते अपने काम को अंजाम देने मे लग गए ...रात को स्टोर रुम मे शर्माजी कभी खुदको कभी छोटे से कमरे को देखने लगते ...और जब सांस लेते तो उन्हें पहली बार खुद मे से कबाड़ होने की दुर्गंध महसूस हो रही थी ।

डा. ज्योति मिश्रा
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

बस लिखना है पढ़ना नहीं :प्रीति चौधरी मनोरमा

आज लेखक केवल पढ़ाना, सुनाना जानते हैं, पढ़ना सुनना नहीं। आज के आधुनिक युग में साहित्य के क्षेत्र में रचनाकारों की बाढ़ सी आ रही है। ये रचनाकार साहित्य का सृजन करने की होड़ में इतने आगे निकल चुके हैं कि स्वयं का लिखा हुआ एक के बाद एक प्रेषित करते रहेंगे ,किन्तु अन्य साहित्यकारों की रचनाओं को पढ़ने का तनिक भी कष्ट नहीं करेंगे।इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

1 व्यस्त जीवन शैली --- व्यस्त दिनचर्या के चलते हम अपनी रचनाओं की संख्या बढ़ाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, उनकी गुणवत्ता पर नहीं।इसी कारण अधिकांशतः लेखक अपनी रचनाओं को पढ़वाना तो चाहते हैं, किन्तु किसी अन्य रचनाकार की रचना को पढ़ना नहीं चाहते।

2 सम्मान पत्र पाने की ललक- आज प्रत्येक रचनाकार को सम्मानित होने की भूख है। आश्चर्य तो तब होता है जब ये सम्मान पत्र मात्र पचास और सौ रुपये में साहित्य के बाजार में बेचे जाते हैं।और खरीदार भी पंक्तियों में , कतारों में लालायित होकर उमड़ते हैं।

3 आगे निकलने की होड़- पहले साहित्य पूजा थी.. साधना थी..समाज से कुरीतियों को दूर करने का माध्यम थी। किन्तु अब प्रसिद्ध होने का उपकरण मात्र बनकर रह गया है।इसलिए कोई भी रचनाकार पढ़ने और सुनने का इच्छुक नहीं है।

4 साहित्य से धनोपार्जन की जिज्ञासा-आजकल के भौतिक युग की चकाचौंध का असर साहित्यकारों पर भी देखने को मिल रहा है।जैसे कभी कभी व्हाट्सएप पर साहित्यिक ग्रुप में एक सन्देश प्रेषित होता है बल्कुल निःशुल्क प्रकाशन , एक रचना भेजिए ,एक पेज जीवन परिचय ,500 रुपये पीटीएम कीजिए।
पाँच रचनाएँ भेजिए ,एक पेज जीवन परिचय ,1500 इसमें कहीं भी साहित्य के प्रति प्रेम प्रदर्शित नहीं हो रहा,अपितु धनोपार्जन की भूख दिखाई दे रही है।

5 अहम ब्रह्मस्मि वाली भावना-आज लेखक इसलिए भी अन्य लेखकों का पढ़ने में रुचि नहीं रखते क्योंकि उनके अंदर “मैं ही ब्रह्म हूँ” की भावना घर कर गयी है। हर कोई स्वयं को सर्वज्ञाता मानता है।इसलिए अन्य रचनाकारों की रचनाओं को पढ़ने और सुनने का प्रश्न ही इनके हृदय में नहीं उठता।

तुझे बचाने की कोशिश

तुझे बचाने की कोशिश
हुई कई -कई बार
क्या सत्य ,क्या असत्य
ढूढ़ते रहे सब
तुझ मे ही गन्दगी ...
क्या कभी जनमानष
को जगा सके ,
ऐसी भी इच्छाशक्ति कोई
अपने अंदर जगा पायेगा ?
एक विनती है माँ
तू तो माँ है
नदी भी है तू
बहती चल
तू बहती चल
सारे पाप कर्म
खुद मैं समाहित
सबको पार कर
तू बहती चल
प्रेम से संचित कर हमें
अपने,तेरा ये कर्ज कोई
भी ना उतार पायेगा
स्वार्थ मैं लिपटी दुनिया .
ये राजनिति का संसार है ,
माँ भी तो है तू
क्षमा कर सबको माँ
तेरी अंतर्मन की पीड़ा को
कोई भी ना समझ पायेगा

रचना पचंपाल देहरादून

अनुराधा

अनुराधा ने बेटी से पूछा आजकल देर से कैसे आतीं हो बेटी कॉलेज से।बेटी ने कहा मॉ अतिरिक्त कक्षा लगतीं है उसके बाद दोस्तो के साथ बाहर खाते पीते हैं। अनुराधा मन ही मन सोचने लगी कहीं शहर की हवा तो नही लग गयीं। लोग सौ बातें बनायेगे। एक दिन मनोरमा ने कहा कि अनुराधा आज मैने तेरी बेटी को मॉल मे किसी लडके के साथ सिनेमा हॉल में देखा। बेटी के घर आते ही उसे जली-कटी सुनाई और मार दिया। बेटी ने कुछ नही कहा रोते हुये वह सो गयी। शाम को उसके भाई का बेटा सोहन आया बोला बुआ, ये रीना का वॉयलेट मेरे पास रह गया था।

आज अचानक कोचिंग के बाद वह घर आयीं तो हम लोग सिनेमा गये थे। पापा आपके यहाँ आने वाले थे इसलिये हम लोगो ने फोन नहीं किया। अनुराधा की आंखों से आंसू निकल गया।बेटी को प्यार किया लेकिन बेटी तो गुमसुम हो गयी थी मॉ की बातें सुनकर।

रेखा तिवारी बिलासपुर

मेरे गाँव में

जिन्दगी सुकून से गुजर जाती मेरे गाँव में,,
रोम रोम खिल उठता बेठकर पेड़ो कि छाँव में,,

जहा चिड़िया रानी सुर अपना सुनाती हैं,
नानी माँ अपनी कहानिया बताती हैं,
चुभता भी ना काटां कभी पाँव में,
हर तरफ खुशिहाली रहती हैं मेरे गाँव में,,

मन्द मन्द हवा बहती हैं,
जागो उठो मुहँ धोलो ये कहती हैं,
डाले झूला ओर झूले पीपल कि छाँव में,
घर पापा के नाम से पहचाने जाते हैं मेरे गाँव में,,

कुदरत का अजीब प्रदर्शन,
सुबह उठते हि करे इश्वर का दर्शन,
वो मजा ही क्या किसी ओर अलाव में,
पल पल खुशियो का गुजर जाती हैं मेरे गाँव में,,

मेघा मिश्रा, मध्यप्रदेश

हाय रब्बा मेरी पड़ोसन

हाय रब्बा मेरी प्यारी पड़ोसन
कितनी नखरेवाली है
घर में कम टिकती है हरदम,
लगती बाहरवाली है।
हाय रब्बा मेरी प्यारी पड़ोसन....

लटक झटक कर वो है चलती
कमर में ठूंसी साड़ी है
नखरे उसके रहते हरदम
लगती कोई नाटकवाली है
हाय रब्बा मेरी प्यारी पड़ोसन....

लंबी चोटी,आंख में काजल
होठों पर हरदम लाली है
औरतों की आंख में खटके
पुरुषों को लगती प्यारी है
हाय रब्बा मेरी प्यारी पड़ोसन.....

आंख मे मटकन,कमर में झटके
नजर उसने पिया पर डाली है
भाए ना कभी मुझको वो बैरन
दिल में मेरे बस एक गाली है
हाय रब्बा मेरी प्यारी पड़ोसन

प्रियंका गौड़ जयपुर

जन्मदिन

सोना का जन्मदिन जैसे-जैसे नजदीक आ रहा था वह बहुत बेचौन थी कि इस बार मैं अपनी मां से क्या उपहार लूं। हर बार मां मुझे महंगे से महंगा उपहार देती है सभी कुछ तो है मेरे पास इस बार में कुछ अलग मांगूंगी दूसरे ही दिन उसके जन्मदिन पर घर में कई तरह के पकवान बन रहे थे वह बहुत खुश थी मगर मां को अ,फिस के लिए देर हो रही थी अतः वह सोना को समझाती हुई बोली बेटा मुझे आज बहुत जरूरी काम से जाना है मगर मैं जल्दी ही आ जाऊंगी सोना उदास हो गई रसोई घर में जाकर खाना बनाने वाली महाराजन से बोली एंटी आज आपकी बेटी का भी जन्मदिन है तो आपको तो घर जल्दी जाना होगा और सारी तैयारियां करनी होंगी नहीं बेटी हम गरीबों के किस्मत में यह सब कहां रहता है सोना ने कहा नहीं आप अपनी बेटी का जन्मदिन आज जरूर बनाएंगे आज क्या हर बार मनाएंगी। यह सुनकर महाराजिन की आंखों में आंसू आ गए सोना बोली आप आज की छुट्टी लीजिए और घर जाइए और बने हुए पकवान में से कुछ पकवान आप घर ले जाइए और अपने गिफ्ट निकालती हुई बोली यह भी आप अपने बेटी को मेरी ओर से दीजिएगा। सोना का यह समर्पण भाव देखकर मां की आंखों में भी आंसू आ गए अतः उन्होंने अ,फिस में फोन कर कर कहा कि वह आज नहीं आ सकती। और सोना के साथ उन्होंने पूरा दिन बिताया सोना अपना जन्मदिन का यही उपहार मानते हुए बहुत खुश हो गई महाराजिन भी दिए हुए सामानों को लेकर अपने घर गई और अपनी बेटी का भी जन्मदिन मना कर खुश हो गई। कभी-कभी छोटे बच्चे अपनी भावनाओं से बड़ों को गहरे तक आहत कर जाते हैं।

नीता चतुर्वेदी विदिशा

वैदिक कर्मकाण्ड और राष्ट्रीयता

किसी भी देश का नागरिक होना तथा उस देश के नागरिक अधिकारों का उपयोग करना राष्ट्रीयता नहीं है। राष्ट्रीयता का अर्थ किसी एक देश विशेष की प्रत्येक वस्तु जिसमें उस देश की भाषा, परम्परा, संस्कृति, रीति-रिवाज, मिट्टी, जन-मानस, पर्वत नदियाँ इत्यादि है। वस्तु से प्रेम करना है, उसे अपना मानना है एवं उसके विकास के लिए प्रयत्नशील रहना राष्ट्रीयता है।

राष्ट्रीयता एक आध्यात्मिक भावना है। जिसका प्रादुर्भाव एक ही भूभाग में निवसित, एक ही भाषा-भाषी, एक ही इतिहास, परम्परा इत्यादि से जुड़े मनुष्यों में होता है। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीयता का अर्थ- जन समुदाय की सामूहिक चेतना है। यही वह चेतना है जो आत्मा की गहराईयों तक आत्मीयता की अनुभूति कराती है। इसी भावना से वशीभूत लोग स्वयं को मृत्यु के हाथों में बिना किसी लाग-लपेट के सौंप देते हैं और इस बलिदान के पीछे उनके राष्ट्र का हित छिपा होता है।

विदेशी शासकों के चंगुल से देश की आजाद करवाना हो अथवा स्वतंत्र राष्ट्र पर विदेशी आक्रमण हो, लोग राष्ट्र की रक्षा के लिए तन-मन- धन से सन्न हो जाते हैं। उनके भीतर अपने देश अपने लोग, अपनी भूमि की रक्षा के लिए जो अदम्य भावना उमड़ती है, वह पारस्परिक भेदों को भुला कर पूरी तरह से पूरे राष्ट्र को एकजुट कर देती है। और यही सर्वात्मना एक साथ बिना कोई परवाह किए शत्रु का डटकर विरोध करते हैं।

राष्ट्रीय भावना से वशीभूत सम्पूर्ण राष्ट्र सिंहनाद कर उठता है, लोग अपने व्यक्तिगत हितों को भूल अपने देश अपनी मातृभूमि अपने राष्ट्र की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए मर-मिटते हैं। असंख्य राष्ट्रप्रेमी महापुरुषों द्वारा किए गए आत्म-बलिदानों की पृष्ठभूमि में उनकी अदम्य राष्ट्रीय भावना एकमात्र प्रेरिका रही है। यह भावना स्वयं सम्भूत होती है, इसके लिए कोई संवैधानिक संगठन नहीं होते। राष्ट्र का शिलान्यास राष्ट्रीयता की भूमि पर ही होता है। इसके बिना कोई भी जनसमूह न तो राष्ट्र बन पाता है और न ही प्रभुतासम्पन्न राज्य।

वैदिक साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना प्रचुर मात्रा में मिलती है। अथर्ववेद के एक मंत्र में कहा गया है :-

अहं राष्ट्रस्याभिवर्गे निजो भूयासमुत्तम्‌;

अर्थात् राष्ट्र की जनता में मैं उत्तम निज अर्थात् अपना होऊँ।' दूसरे शब्दों में- राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह सरकार में हो अथवा जनता में हो, अपने को राष्ट्र का उत्तम निज समझे। यहाँ उत्तम निज की भावना राष्ट्रभूमि, राष्ट्र संस्कृति तथा राष्ट्र भाषा के प्रति मातृत्व की भावना है। जो व्यक्ति उस देश की राष्ट्रभूमि, राष्ट्र-संस्कृति तथा भाषा के प्रति ममत्व रखता है। वही व्यक्ति स्वयं को उस राष्ट्र का उत्तम निज कह सकता है। यदि सभी व्यक्ति उत्तम निज भाव से रहेंगे और राष्ट्र के हित-अहित को अपना हित-अहित समझेंगे तो वे राष्ट्र का अहित नहीं कर पाएँगे।

वेदों में यह संदेश भी दिया गया है कि अपने अखण्ड राष्ट्र की रक्षा के लिए

यहाँ रहने वाले लोगों में परस्पर एकता संगठन एवं समानता की भावना होना परमावश्यक है। क्योंकि ऊँच-नीच तथा छुआछूत की भावना से राष्ट्र का पतन अवश्यम्भावी है। इस राष्ट्रोपयोगिनी एकता के लिए वेदों में ईश-वन्दना की गई है और सभी नागरिकों से एकता व अखण्डता की जोरदार अपील की गई है।

राष्ट्रीयता की दूसरी शर्त है अपने राष्ट्र पर गर्व करना। जिस व्यक्ति में अपने राष्ट्र के प्रति गर्व की भावना नहीं है निश्चित ही उसके अंदर राष्ट्रीय भावना का भी अभाव है। ऐसी स्थिति में अगर कोई अन्य देश का निवासी अपनी समृद्धि और विकास का उल्लेख करने लगे तो अपने देश को उतना समृद्ध न पाकर व्यक्ति में हीन भावना विकसित होने लगती है। कुछ दिन बाद वह उस हीन ग्रंथि का इतना शिकार हो जाता है कि बात-बात में दूसरे देश की प्रशंसा और अपने देश की निंदा करने लगता है। जब कोई देश, जाति या समाज अपनी हर प्राचीन वस्तु से, परम्परा से, मान्यता से, आचार-व्यवहार से घृणा करने लगता है, यह स्थिति मानसिक गुलामी की पराकाष्ठा होती है। दुर्भाग्यवश आज भारत में लगभग ऐसी स्थिति ही विकसित हो रही है। लोग पाश्चात्य शिक्षा-पद्वति, व्यवहार, धर्म, आचार-व्यवस्था की सराहना करते नहीं थकते। इसके विपरीत अपने देश की हर व्यवस्था में न केवल त्रुटियाँ देखते हैं, बल्कि दोषों को द्विगुणित कर बताते हैं।

वैदिक ऋषियों ने स्पष्ट कहा है कि व्यक्ति अपने राष्ट्र को उत्तम समझे। अपनी परम्परा के प्रति गर्व की भावना रखे। श्री कृष्ण ने श्रीमद्भागवत गीता में इसी ओर संकेत किया है-

श्रेयान स्वधर्मो विगुणरू परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयरू परधर्मो भयावहरू ।।2

अर्थात् गुणरहित भी अपना धर्म दूसरे से श्रेष्ठ है तथा गुणयुक्त भी दूसरे का धर्म श्रेयस्कर नहीं। अपने धर्म में मरना भी अच्छा है, किन्तु दूसरे का धर्म भयावह है।

सा नो भूमिस्त्विषि बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे।3

वैदिक ऋषि सदा यही प्रार्थना करता है कि सभी देवता उसके उत्तम राष्ट्र में सभी प्रकार का धन-वैभव प्रदान करें।

प्रादुर्भूतौस्मि राष्ट्रैस्मिन् कीर्ति वृद्धि मं दधातु मे।।4

इस मंत्र में वैदिक ऋषि अपने राष्ट्र में उत्पन्न होने का गर्व करता है और जोर देकर कहता है कि मैं इस राष्ट्र में पैदा हुआ हूँ, परमात्मा मेरे राष्ट्र को कीर्ति और वृद्धि प्रदान करे।

जिस राष्ट्र में 'अहमुत्तरौहमुत्तरः' की भावना से लोग काम करते हैं, वह राष्ट्र विकास करता है। जिस राष्ट्र में श्रेष्ठ आचार वाले लोग अपने कर्म में आगे रहते हैं और उन्हें अपने प्रचार की सुविधा प्राप्त होती है, वह राष्ट्र श्रेष्ठ होता है और उसी को 'संवेश्य राष्ट्र' कहते हैं।

आयतु मित्र ;तुभिः कल्पमानरू
संवेशयन्पृथिवीमुस्रियाभिः ।
अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्बृहद्राष्ट्रं संवेशयं ददातु ।।5 अथर्व. ३.८.१

संवेश्य राष्ट्र का अर्थ है, ऐसा राष्ट्र जो प्रवेश करके रहने योग्य हो। ऐसा न हो कि जिसमें प्रवेश करने पर घुटन सी महसूस हो। इस प्रकार का राष्ट्र देवताओं की कृपा से ही प्राप्त होता है।

वैदिक याज्ञिक कर्मकाण्ड में राष्ट्रीयता

यज्ञ आर्य-संस्कृति का केंद्र बिंदु है। वैदिक काल की सभी सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक गतिविधियों के नियंत्रण में यज्ञ की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका थी।

वैदिक समाज की समस्त गतिविधियाँ, व्यक्ति का जीवन तथा सम्पूर्ण राष्ट्र सब यज्ञ से संपृक्त था। याज्ञिक कर्मकाण्ड विषयक विधियों के अध्ययन से मालूम होता है कि तत्कालीन ऋषियों ने याज्ञिक कर्मकाण्ड में केवल विधि के सम्पादन में ही यज्ञ की इयत्ता नहीं मानी थी, बल्कि उन विधियों के माध्यम से एक स्वस्थ राष्ट्रीय चिंतन भी प्रदान किया था, जिसमें राष्ट्र की अभिवृ) सर्वोपरि थी। ऐसा होता भी क्यों न? व्यष्टि से समष्टि तथा समष्टि से राष्ट्र अधिक गुरुतर होता है। राष्ट्र में सुरक्षित रहकर ही संस्कृति का विकास संभव है। राष्ट्र की प्राप्ति भी तो तप एवं दीक्षा से होती है। अथर्ववेद में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है।

भद्रमिच्छन्त षय स्वविर्दस्तपो दीक्षामुपसेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्यै देवा उपसंनमन्तु।।6

अर्थात् 'ब्रह्मत्त्ववेत्ता ऋषियों ने कल्याण की कामना से तप और दीक्षा का पालन किया, जिसके प्रभाव से राष्ट्र, बल तथा ओज पैदा हुआ।' इस प्रकार राष्ट्र ऋषियों के त्तप तथा दीक्षा रूपी यज्ञ का परिणाम है।

याज्ञिक विधियों के विधान में राष्ट्रीयता की भावना।

यज्ञ की विधियाँ –
देवताविषयक,
द्रव्यविषयक
मन्त्रविषयक,
यजमानविषयक,
त्विग्विषयक,
कालविषयक,
देशविषयक एवं पात्रविषयक इत्यादि हैं।

इन सभी विधियों में राष्ट्रीय भावना के संकेत इतस्ततः प्राप्त होते हैं। कुछ कर्म तो ऐसे हैं जो प्रत्यक्षरूप से राष्ट्र के अभ्युदय के लिए किए जाते हैं। राजसूय में जो याज्ञिक विधियाँ हैं, वे मुख्य रूप से राष्ट्रहित को सम्मुख रखकर ही सम्पादित की जाती हैं। राजसूय यज्ञ साधारण व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि राजाओं द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। इसलिए उसमें जिन कृत्यों का विधान है, उनमें किसी न किसी प्रकार की राष्ट्रहित-विषयक दृष्टि अवश्य है।राजसूय में अग्निनेत्र, यमनेत्र, विश्वेदेवनेत्र, मित्रावरुननेत्र, मरुन्नेत्र, सोमनेत्र संज्ञक देवताओं के लिए निर्दिष्ट मंत्रों द्वारा पाँच वातीय आहुतियाँ प्रदान करने का विधान है।

पचिंवातीयमाहवनीयं प्रतिदिशं व्यूह्य
मध्य च स्रुवेणाग्निषु – जुहोति 'अग्निनेत्रेभ्यः' इति प्रतिमंत्र।7
उत्तराः समस्य 'ये देवाः' इति प्रतिमंत्रः।8

यह विधि इस बात की ओर संकेत करती है कि जिस प्रकार अग्नि, यम, विश्वेदेवा, मित्रावरुण या मरुत् तथा सोम क्रमशः पूर्व, दक्षिण, उत्तर एवं ऊर्ध्व दिशा के देवता हैं, इसलिए इन देवताओं को आहुति प्रदान करने से ब्रह्मांड की प्रक्रिया सुचारु रूप से संचालित होती है, उसी प्रकार विभिन्न दिशाओं में स्थित राज-कर्मचारियों को राजा द्वारा प्रसन्न रखने से राष्ट्र सुरक्षित रहता है। सभी कर्मचारी अपनी-अपनी दिशा में स्थित होकर राष्ट्र की रक्षा करते हैं। जब राजा राजसूय यज्ञ करता है तो राष्ट्र को आंतरिक अथवा बाह्य कोई भी खतरा नहीं होना चाहिए। महाभारत से पता चलता है कि जब महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करना चाहा, तब भगवान श्रीकृष्ण के सुझाव से पहले जरासंध आदि शत्रुओं को परास्त करना पड़ा, ताकि राजसूय यज्ञ में किसी भी प्रकार का विघ्न उपस्थित न हो पाए। इसी भावना से राजसूय में अग्निनेत्र आदि दिक्पाल देवों को आहुतियाँ प्रदान की जाती हैं।

वाजपेय यज्ञ में कई ऐसी कर्मकाण्डीय विधियाँ मिलती हैं जिनमें तत्कालीन याज्ञिकों

वाजपेय में रथधावन का विधान है। जिस रथ पर राजा बैठता है, उस रथ के दौड़ने से पूर्व वहाँ 'रथविमोचनीया' नामक इष्टि होती है। यजमान रथ के नीचे की भूमि को यह कहते हुए देखता है कि 'हे पृथ्वी माता! मुझे हिंसित मत करो और मैं भी तुम्हें हिंसित न करूँ'।

पृथिवी मातर्मा मा हिंसिर्मो अहं त्वाम्।9

यद्यपि इस विधि में नीचे की भूमि के वेक्षण का उल्लेख है, किन्तु इसके अंदर एक बहुत बड़ी राष्ट्रीय भावना निहित है।

भूमिवेक्षते पृथिवी मातरिति।10

वाजपेय याग में 'वाजप्रसवीय' संज्ञक सात आहुतियों के देने का विधान है।

स्त्रुवेण सम्भृताञ्जुहोती वाजस्येममिति प्रतिमंत्र ।11

इन आहुतियों के समय जिन मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है, उनमें वैदिक ;ऋषियों की राष्ट्र समृद्धि की भावना व्यक्त हुई है। प्रथम आहुति प्रदान करते समय यह कामना की गई है कि अन्न के उत्पादक प्रजापति ने सर्वप्रथम सृष्टि के प्रारम्भ में राजा सोम को औषधियों तथा जलों में स्थापित किया।

वाजस्येमं प्रसवः सुषुवेग्रे सोमं राजानमोषधीष्वप्सु।

ता अस्मभ्यं मधुमतिर्भवन्तु वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।।12

वे औषधियाँ तथा जल हमारे लिए मधु से युक्त हों, तथा उन औषधियों एवं जलों से युक्त हम राष्ट्र में सदा जागरूक रहें।

शेषेणाभिषिञ्चिति यजमानं 'देवस्य त्वे'ति।13

वाजपेय में प्रसवीय होम के बाद बचे हुए होम द्रव्य से यजमान को अभिषिक्त करने का विधान है।

देवस्य त्वा सवितुरू प्रसवैश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।।14

अभिषिक्त करते समय इस मंत्र का उच्चारण किया जाता है, इसमें राजा को के मूल में राजा को बृहस्पति के साम्राज्य अर्थात् विद्याबल में सर्वश्रेष्ठ बनाना है। पुरोहित यजमान को बुद्धिमान राजा के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है। यह बात सर्वविदित है कि वही राष्ट्र उन्नति के पथ पर चल सकता है, जिसका राष्ट्राध्यक्ष बुद्धिमान हो। इसलिए ऐसा विधान करते समय विधानकर्ता के मन में यही राष्ट्रीय भावना काम कर रही है कि उसका राजा मेधा से युक्त हो, ताकि अपने राष्ट्र का वह सम्यक् प्रकार से संरक्षण और संचालन कर सके।

अश्वमेध एक राष्ट्रीय यज्ञ है। इसका सम्पादन वही कर सकता था जो चक्रवर्ती राजा होना चाहता था। कमजोर राजा इसका संपादन नहीं कर सकता था। वैदिक काल में यद्यपि कई छोटे-छोटे राजा हुआ करते थे, किन्तु इन सबका अधिपति एक चक्रवर्ती राजा होता था। अश्वमेध का अश्व आध्यात्मिक तथा आधिदैविक धरातल पर भले ही आत्मा या सूर्य का प्रतीक रहा हो, किन्तु आधिलौकिक धरातल पर वह शक्ति का प्रतीक था। इसलिए अश्वमेध यज्ञ में जो विधियाँ विहित हैं, वे इसी उद्देश्य से प्रेरित हैं। अग्निचयन याज्ञिक कर्मकाण्ड का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृत्य है। सोमयाग के लिए इष्टकाओं से वेदि का निर्माण अग्निचयन कहलाता है। वेदी के चयन में पाँच चितियाँ होती हैं। चतुर्थ चित्ती में राष्ट्रभृत् नामक चार इष्टकाओं (ईंटों) को क्रमशः पूर्व , पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण की ओर रखने का विधान है।15 'अग्ने यशस्विन्ते इत्यादि मन्त्र का उच्चारण करता हुआ सर्वप्रथम पूर्व की ओर एक इष्टका रखता हैय तदनन्तर 'भद्रं पश्यन्तः' यह मन्त्र बोलता हुआ दक्षिण की ओर दूसरी इष्टका रखता हैय तदुपरान्त 'धाता विधाता' मन्त्र बोलते हुए पश्चिम की ओर तीसरी इष्टका रखता हैय तदनन्तर 'अभ्यावर्तध्वम्' यह मन्त्र बोलते हुए चौथी

इष्टका उत्तर की ओर रखता है। तैत्तिरीय संहिता स्पष्ट रूप से कहती है कि यह जो चार राष्ट्रभृत् संज्ञक इष्टकाओं से अग्निचयन किया जाता है, वह अग्नि की राष्ट्रभृत् चिति है। इस चिति से इसमें राष्ट्र को ही प्रतिष्ठित किया जाता है।

राष्ट्रभृक्त एता उप दधात्येषा वा अग्नेश्चिती राष्ट्रभृत, तथैवास्मिन् राष्ट्रे दधाति, राष्ट्रमेव भवति, नास्मा द्रास्माद्राष्ट्रम् भ्रंशते।।16

इस राष्ट्रभृक्त-चयन से राजा में राष्ट्र प्रतिष्ठित रहता है, उससे अलग नहीं होता।

राष्ट्रभृत्क-चिति में प्रयुक्त इन मंत्रों के भाव को देखने से मालूम होता है कि पहले मंत्र में यशस्वी अग्नि से प्रार्थना की गई है कि वह यजमान राजा को अपने यश से प्रेरित करेय इन्द्र से सदा युक्त रहने वाली अपचिति को इसके पास लायेय सुन्दर वर्चस् वाला सबका मूर्धन्य यह परमेष्ठी ख्रराजाक्ष समानों में उत्तम कीर्ति वाला होवे। दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि सबके कल्याण को देखते हुए स्वर्गलोक को जानने वालेऋषियों ने तप और दीक्षा का आचरण कियाय उससे क्षत्र, बल और ओजस् उत्पन्न हुआय उस क्षत् बल एवं ओजस् से सम्पन्न राजा को सभी नमन करें। तीसरे मन्त्र में कहा गया है कि धाता, विधाता, प्रजापति, परमेष्ठी, विराज, स्तोम, छन्द, निवित् सभी कहते हैं कि उस राजा के लिए राष्ट्र को लक्ष्य कर हम नमस्कार करें। चौथे मन्त्र में कहा गया है कि हे विशो, तुम सब एक साथ इस राजा की ओर लौटोय यह शासन करने वाला राजा आप सबका अधिपति होवेय इसके आदेश का पालन करो, इसके पीछे आप सब जीवित रहो।

याज्ञिक कर्मकाण्ड में विहित अनेक आहुतियाँ, स्तोमों आदि के सम्पादन में वैदिक यज्ञवेत्ताओं की राष्ट्रविषयक चिंतन धारा के अवलोकन से यह बात स्पष्ट होती है कि इन विधियों के सम्पादन में कोई संकुचित स्वार्थ भावना नहीं, बल्कि एक अखण्ड राष्ट्र की प्रतिष्ठा को कायम रखना उनका अभीष्ट है। ब्रह्म, क्षत्र और विश् तीनों के सामंजस्य से ही राष्ट्र प्रतिष्ठित होता है। यही वैदिक ;षियों का सर्वमान्य सिद्धान्त है। इसलिए विविध कर्मकाण्डगत विधियों के विधान में उनकी यही दृष्टि सदा जागरूक रही है।

अथवर्रू ३.५-२

गीता. ३.३५

अथर्व. १२.१.८

आश्वसं. ५.८८.७

अथर्व. ३.८.१

अथर्व. १९.४१.१

का.श्रौ.सू. १५.१.१८य

का.श्रौ. सू. १५.१.१९

मा.यजु. १द्र.२३

का.श्रौ.सू. १४.५.२३

का.श्रौ.सू. १४.५.२३

मा.यजु. ९.२३

का.श्रौ.सू. १४.५.२४

मा.यजु. ९.३द्र

वाधूलश्रौत सूत्र ८.४द्र.८१-८६

तै.सं ५.७.४.9

डॉ0 प्रिया सूफी

होशियारपुर, पंजाब

कद्र

दो दिन से बुखार में तपती सीमा को आज थोड़ा आराम आया तो आदतन रसोई में चली गयी।सारी रसोई फैली हुई थी।जूठे बर्तनों से सिंक भरी पड़ी थी ,स्लैब पर चाय आदि के सूख चुके निशान।न पति को काम करने की आदत थी न बेटे को।बुखार में पड़ी दोनों की चिड़ चिड सुनती रहती थी। उसने गैस पर चाय बना कर पानी गर्म करने रख दिया। चाय पीकर पहले किचन साफ की फिर गर्मपानी से सारे बर्तन साफ किये। रसोई अब रसोई जसी लग रही थी। धीरे धीरे सारी सफाई निबटा कर वह आराम करने लगी।दो दिन के बुखार ने बदन तोड़ दिया था। आँख बंद की ही थीं कि तुम करती ही क्या हो सारे दिन घर में।हर रोज कभी सर दर्द कभी बुखार तो कभी कोई और झंझट।काम न करने के बहाने। पति के स्वर कान में गूँज गये।आँख से दो आँसू ढुलक तकिये में जज्ब हो गये।

एक घंटे आराम करने के बाद सीमा ने फ्रिज खोला। पति के आफिस से आने का समय हो रहा था। बेटा भी स्कूल से आने वाला था। फ्रिज में भी सब बेतरतीव पड़ा हुआ था।सब्जी निकाल कर धोई, और कुकर में चढ़ा दी। फिर फ्रिज साफ किया। इधर उधर बिखरे गंदे कपडे वाशिंग मशीन में डाल वह आटा गूंथने लगी। तभी कालबेल की आवाज सुन उसने गैस पर चाय का पानी चढ़ा दरवाजा खोला।देखा पति ही थे साथ में बेटा भी। अरे ,अब बुखार कैसा है?घर मे चारों तरफ नजर दौड़ाते रवि ने पूछा? ठीक है ष्कह कर रसोई में चल दी। जरा चाय बना दोगी? रहने दो ,मैं ही बना लेता हूँ। कहकर रसोई की तरफ बढ़े ही थे कि चाय लेकर सीमा रसोई से निकली ।साथ में पोहा भी था।पानी लेने के लिए रवि रसोई में गये,तो रसोई देख चौंक गये। चेहरे पर शर्मिंदगी एक मिनिट को झलकी।

रात का खाना बनाने सीमा रसोई में गयी तो रवि भी साथ आ गये।जब तक सीमा ने फुलके उतारे ,रवि ने कटोरी में सब्जी परोसनी शुरु कर दी। आप रहने दीजिए मैं कर लूँगी।आप खाइये। नहीं सभी फुल्के सेंक लो साथ ही खायेंगे। कहते हुये बेटे को आवाज लगाई। लो बेटे, ये ग्लास और पानी टेवल पर रख के आओ। खाने से निबट सीमा रसोई साफ करने लगी तो रवि ने हाथ बँटाना शुरू कर दिया। सीमा बर्तन माँज रही थी ,रवि ने धोकर रख दिए। ष्चलो अब तुम आराम कर लो, थक गयी होगी। बाकी हम सुबह कर लेंगे ।
पर , आप परेशान न हों मैं कर लूँगी। आदत है मुझे। मुझे माफ कर दो सीमा ,तुम्हारे बीमार होने पर पता लगा कि तुम क्या करती थी घर पर रह कर। तुम से घर की जान है। दो दिन में ही परेशान हो गया था। और तुम्हारे लिए भी परेशानियाँ बढ़ा दी।हाथ में पानी का ग्लास व दवा देते हुये रवि की आवाज में पश्चाताप साफ झलक रहा था। खुशी से सीमा की आँखें भर आई।उस अश्रुबूंदों को रवि ने अपनी हथेलियों में संजो लिया।

मनोरमा जैन पाखी

आईये.......................................मणिपुर

अगर आपको नई नई जगहें देखने का शौक है तो आपको जीवन में एकबार मणिपुर की सैर जरुर करनी चाहिए। भारत के इस पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में सिरउई लिली, संगाई हिरण, लोकतक झील में तैरते द्वीप दूर-दूर तक फैली हरियाली, उदारवादी जलवायु और परंपरा का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है।

मणिपुर की राजधानी इम्फाल, जो प्राकृतिक सुंदरता और वन्यजीवन से घिरी हुई है। इम्फाल में द्वितीय विश्व युद्ध और कोहिमा युद्ध का उल्लेख मिलता है। यह स्थल यहां आने वाले पर्यटकों को मणिपुर के साथ जोड़ता है। कई लोग इस बात को सुनकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि पोलो खेल की उत्पत्ति इम्फाल में हुई थी। इस जगह कई प्राचीन अवशेष, मंदिर और स्मारक हैं। श्री गोविंद जी मंदिर, कांगला पैलेस, युद्ध स्मारक, महिलाओं के द्वारा चलाया जाने वाले बाजार - इमा केथैल, इम्फाल घाटी और दो बगीचे इस जगह को पूरी तरह से पर्यटन के लायक बनाते हैं।

मणिपुर की राजधानी इम्फाल के बीचों बीच स्थित इमा कैथेल राज्य की आंतरिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। मणिपुरी भाषा में इमा का मतलब होता है "माँ" और "कैथेल" का मतलब होता है बाजार। यानी महिलाओं के द्वारा चलाये जाने वाले बाजार को इमा केथैल कहा गया है। मणिपुर की आंतरिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं का बड़ा योगदान है। जिसके कारण मणिपुर की महिलाएं अन्य भारत की महिलाओं के मुकाबले ज्यादा आत्मनिर्भर और सशक्त हैं। मणिपुर की महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का ही प्रतीक है इमा कैथेल या नुपी कैथेल।

पूरी तरह से महिलाओं द्वारा चलाए जाने वाले इमा केथैल में आप हर चीज और हर वस्तु पा सकते हैं। यदि एक कोने में एक औरत एक किलो मछली तौलने में व्यस्त है। तो दूसरे कोने में कोलाहल के बीच एक औरत बुनाई करती हुई और ग्राहकों को खुश करने के लिए तुरंत के बने हुए ऊनी कपड़ों को बेचती हुई पाई जा सकती है।

16 वीं सदी में बना मणिपुर का इमा बाजार देश में ही नहीं संभवतः दुनिया का इकलौता ऐसा बाजार है। इमा बाजार यानी मदर्स मार्केट वर्ष 1533 में बना था। इस बाजार के बसने के पीछे भी एक कहानी है। दरअसल तब पुरुषों को चावल के खेतों में काम करने भेज दिया जाता था। तब घरों में अकेली औरतें बचती थीं। धीरे-धीरे इन्हीं औरतों ने यह बाजार बसा दिया। पुराने मार्केट के पास ही यहां 2010 में सरकार ने नया मार्केट शुरू किया है।

महिलाओं के द्वारा संचालित यह बाजार अपनी एक अलग पहचान रखता है। दुनिया का शायद यह इकलौता बाजार होगा जहां सिर्फ और सिर्फ महिला दुकानदार ही हैं। यह पूरे तरीके से महिलाओं का मार्केट है। क्या नहीं मिलता है यहां , पूर्वोत्तर के खान-पान से लेकर परंपरागत और आधुनिक सामान तक सब कुछ उपलब्ध है। इम्फाल शहर के ख्वाईरबन्द नामक इलाके में स्थित यह बाजार तीन भागों में बंटा हुआ है। पुराना

बाजार, लक्ष्मी बाजार और नया बाजार के नाम से बड़े-बड़े कम्प्लेक्स में विभाजित है। इन तीनों में अलग-अलग वस्तुएँ मिलती हैं। जैसे नया बाजार में सब्जी, मछली और फल मिलते हैं तो वहीं लक्ष्मी बाजार में परंपरागत कपड़े और अन्य घरेलू सामान। इन तीनों कम्प्लेक्स को मिलाकर बनता है इमा कैथेल। जिसके अंदर छोटी-छोटी पंक्ति में 15-16 दुकानें हैं। दुकानें कोई ईट सीमेंट या टीन से बनी हुई नहीं हैं बल्कि जैसे सब्जी मंडी में होती हैं कुछ-कुछ वैसा ही हैं।

इस मार्केट में करीबन 3500 महिलाएं अपनी दुकानें चलाती हैं। सबसे दिलचस्प बात यह है कि यहां बाकी बाजारों की तरह प्रतिस्पर्धा नहीं की जाती है। अगर कोई सामान आपको किसी दुकान पर नहीं मिलता, या पसंद नहीं आता, तो वह स्थानीय दुकानदार महिला आपको दूसरी महिला दुकानदार तक भेज देती है। इस बाजार के कुछ नियम हैं जो इसकी खूबसूरती को और अधिक बढ़ाते है। यहां यदि कोई कपड़ा बेच रहा है तो वह कपड़ा ही बेचेगा। सब्जी या कुछ और नहीं बेच सकता। यह कोई लिखित कानून नहीं है पर इस बात का सब लोग ध्यान रखते हैं। इससे कहीं न कहीं समानता का भाव पनपता है।

इस बाजार की सबसे बड़ी खासियत है यहां का अनुशासन और अलिखित यानी बिना लिखे नियम जो कई दशकों से पालन किए जा रहे हैं। महिलाएं यहां के अलिखित नियम-कानून का पालन करने में गर्व महसूस करती हैं। इन महिलाओं को पता है कि उनकी एकता ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है। यहां की महिलाएं राजनीतिक रूप से जागरूक और सक्रिय हैं। वे किसी भी तरह के अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करने में नहीं झिझकती हैं। यह बाजार कई तरह की बहसों और चर्चाओं का केंद्र बिंदु है।

यह बाजार लोगों के बीच नई जानकारियों के प्रचार-प्रसार के लिए भी कार्य करता है। इस बाजार में बैठी महिलाओं को कई तरह की समस्याओं का सामना पहले भी करना पड़ा है और वे आज भी कर रही हैं। इस बाजार की संरचना में परिवर्तन के माध्यम से इन महिलाओं को समस्याओं से बचाया जा सकता है। कुछ समय पूर्व दुनिया के एकमात्र महिलाओं के बाजार को भूकंप से नुकसान पहुंचा था। यह अति दुःखद था। इस भूकंप में पुराने जमाने के घर और बिल्डिंग को कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन इस मार्केट को नुकसान होना अफसोस की बात थी। वहां की महिलाओं का कहना है कि भूकंप से बाजार को नुकसान होने की वजह हम लोग कई महीनों तक इस बाजार में बैठ नहीं पाये। इस वजह से जीवन यापन में संकट पैदा हो गया था। क्योंकि यहां की कई महिलाओं के परिवारों के लिए आमदनी का एकमात्र जरिया यह मार्केट ही है। सरकार के प्रयत्नों से अब इस बाजार की स्थिति यथावत हो चुकी है।
इस तरह इमा केथैल दुनिया का एक मात्र सशक्त महिलाओं यानी माँओं का बाजार है। जिसमें सभी अच्छी और टिकाऊ वस्तुएं उचित दाम में मिलती हैं। यह हम सब महिलाओं के लिए तथा राष्ट्र के लिए गर्व का विषय है।

निशा नंदिनी
तिनसुकिया, असम
9435533394

शार्टफिल्म, विज्ञापन फिल्म व माडलिंग में कर्य हेतु सम्पर्क करें
महिला उत्थान योजना अन्तगर्त आनलाइन प्रशिक्षण
9451647845

रिश्तों का अतीत

जीवन बड़ा हंसी खुशी गुजर रहा था ।एक अदद बीबी और दो बच्चों के साथ। व्यवसाय भी दिन प्रतिदिन नई मंजिले पार करता हुआ, अपने मकाम पर पहुंच चुका था। किसी तरह की कोई भी चिंता नहीं थी। दोनों बच्चें पढ़ लिख कर बड़ा डाक्टर और दूसरा इंजनियर बन चुका था। बड़े बेटे की शादी हो चुकी थी, और वो अमेरिका में ही बस चुका था। छोटा बेटा भारत के , बेंगलोर शहर में था, अभी कुछ दिन पहले ही उसका विवाह हुआ था द्य सच कहूँ ,तो एक सुखी परिवार था हमारा ।पूरे शहर में हमारे परिवार की मिसाल दी जाती थी द्यइतना बड़ा कारोबार और हम दोनों पति -पत्नी ,रोमांस और रोमांच भी दिन प्रति दिन बढ़ता ही रहा।अचानक एक दिन पत्नी ने कहा कि ,सुनो ये सब हम किसके लिए कर रहे है ?बच्चें अपने अपने काम धंधे में है ,हमारे बाद ये सब कौन सम्भालेगा? प्रश्न सटीक था ,जिसके बारे में कभी सोचा भी नहीं था ,और क्यों सोचते सुख में डूबा आदमी कब कहाँ कुछ सोच पाता है? दीपावली पर दोनों बच्चें और बहुए घर आये हुए थे। जयपुर मे दीपावली सदैव साथ ही मनाते थे, जिसमे आजतक कभी कोई कोताई नहीं हुई द्य रात डिनर पर हमने यानि पति -पत्नी ने बच्चों से व्यवसाय के बारे मे पूछा, तो उनका जवाब था,ष हमारा इस क्षेत्र में कोई रुझान नहीं हैष। हमने कहा कि बेटा ये सब फिर किसके काम आयेगा ? तभी बड़ी बहू ने कहा किष ये व्यवसाय और आप की विरासत मैं आगे ले जाउंगीष द्यहम दोनों पति -पत्नी अवाक ,कोई जवाब नहीं ।बड़े बेटे ने विरोध भी किया ,तो उसका जवाब था कि इस उम्र में हमे इनका सहारा बनना चाहिए या केवल अपना ही सोचना चाहिए,खैर एक बड़ी चिंता से निजात मिली। और ये तय हुआ कि जब तक मैं सम्भाल सकता हूँ ,ठीक उसके बाद बड़ी बहू, जो अब अमेरिका नहीं जाने का निश्चय कर चुकी थी,व्यवसाय संभालेगी। हमने बहुत समझाया, बेटी इसका क्या होगा पर वो नहीं मानी और पतिदेव को भी कुछ समय बाद मना कर यही भारत में बुला लिया। ये है मेरे सुखी जीवन की कहानी। अचानक बीबी की फरमाइश बारिश का मौसम चलो बाजार चलते है। रिमझिम बारिश में भीगते हुए हमने कहा भी कि आप को जुकाम लग रहा है, पर बीबी की जिद के आगे एक न चली और हम चल दिए बाजार अभी बापू बाजार पहुचे ही थे कि, अचानक सामने से एक जोड़ा आता हुआ दिखा और वह ठीक उसी दुकान में था बिलकुल मेरे सामने, ओह रमा तुम !और अगर मैं गलत नहीं हूँ तो तुम विकास! परिचय की रस्म पूरी हुई ,और फिर मिलने का वादा हमारी पत्नी ने पूछा, ये कौन ?हमने कहा की मेरे कोलेज की साथी । यकीनन उसके पति ने भी पूछा होगा घर जाकर निढाल सा बिस्तर पर था ।पत्नी ने बहुत पूछा कि आज इतना नीरस सा क्यों लग रहा है? पर कोई जवाब नहीं रात गुजर गयी ,फिर वही दिन वही सब कुछ लेकिन यादे जिसे लगभग हम दोनों ने भुला दिया था ,फिर से परेशान करने लगी। एक दिन उसका फोन आया विकास क्या कर रहे हो? अचानक जवाब था तुम्हारा इंतजार उसने कहा कि चले आओ ।मैं घर का पता वात्स्प पर भेज रही हूँ द्यन जाने कब उसके दरवाजे के बाहर कदम पहुंच गये। घंटी बजी और सामने रमा, खूबसूरत बगीचा पर रमा ने कहा कि अंदर चलते है ,और मैं श्देवदास श्की तरह उसके पीछे पीछे ।उसके कमरे में ,एक लम्बी खामोशी के बाद, अपनी चुप्पी को तोड़ते हुए रमा ने कहा किश यदि आप को किसी और से शादी करनी थी, तो मुझे झूठा प्यार का दिलासा देकर क्यों गये शविकास एक दम चुप ये क्या कह रही हो? शरमा मुझे दूसरी शादी करनी थीश? रमा ने एक खत, जो इतने बरसों से सम्भाल के रखा था, निकाला। खत में लिखा था प्रिय रमा मुझे माफ कर देना। न चाहते हुए भी मुझे किसी और से शादी करनी पड़ रही है ,इसे मेरी मजबूरी समझ कर ,तुम अपना घर संसार बसा लेना मैं जानता हूँ ,ये कहना जितना आसान है ,उतना ही मुश्किल, लेकिन समय सब ठीक कर देगा विकास।

विकास न जाने कितनी बार इस खत को पढ़ता रहा ,लेकिन कुछ समझ में नहीं आया कि ,ये खत मैंने कब लिखा? रमा ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा कि कोई जवाब है तुम्हारे पास ?विकास ने कहा ष ये खत मैंने कब लिखा तुम्हे रमा ?

. क्यों ये तुम्हारा खत नहीं है? विकास-ष नहीं ये खत मेरा नहीं है, हाँ ,इस पर नाम जरूर मेरा है ,पर मैंने ऐसा खत कभी नहीं लिखा और मैं क्यों लिखूंगा ,रमा मैं आज भी तुम से उतना ही प्यार करता हूँ ये शादी भी केवल मजबूरी में करनी पड़ी, क्यों कि मेरे जाने के बाद तुम किसी विदेशी ,जो था तो भारतीय, पर बड़ा पैसे वाला था, उसके साथ भाग गयी थी। आखिर कब तक इंतजार करता ? और न चाहते हुए भी मुझे शादी करनी पड़ी ।तुम्हारे घर भी गया ,तो मालुम पड़ा , तुम लोग सब विदेश में रहते हो। ष मैं भाग गयी थी, किसी और के साथ ! ये सब तुम क्या कह रहे हो ?ये देखो। वो खत ,जो तुमने मुझे लिखा है ,और सच पूछो तो इतने सालो से ये खत खामोश रखा था, तुम से मिलने के बाद एक दिन कुछ पुरानी यादे तलाश रहा था ,तो ये खत सामने आया, और लगा कि तुम से पूछूँगा जरूर कि ऐसी क्या कमी थी मुझ में ?जो तुम किसी और के साथ भाग गयी। मैंने अपने माँ बाप से बहुत पूछा ,तो उन्होंने इतना ही कहा कि उसके पिताजी आये थे ,और उन्होंने कहा कि हमारी लडकी हमारे मुँह पर कालिख पोत कर चली गयी ।उसके बाद हमने बहुत कोशिश की जानने की कि,ऐसा क्या हुआ जो अचानक उसने ऐसा किया, पर कोई जवाब नहीं मिला। फिर अचानक एक दिन तुम्हारे घर पर ताला देखा जो आज भी लगा

हुआ है। एक लम्बी खामोशी के बाद रमा बोली, अब समझ में आया, ये सब मेरे पिता का किया हुआ है। उन्होंने मुझ से कहा था , बेटा हमारा शहर में रहना मुश्किल हो गया है, क्यों कि विकास के परिवार वाले हमे बदनाम कर रहे है। कहते हैं कि रमा और उसका खानदान था ही ,ऐसा कब तक हम लडके को कंवारा रखते दोनों की आँखों में चुप्पी और फिर आंसू सिर्फ आंसू कब शाम हो गयी कुछ पता ही नहीं चला। दिन महीने साल लगभग गुजर गए, न उसके पति को कुछ पता और न मेरी पत्नी को कुछ पता। उम्र के इस ढलान पर फिर से अतीत लौट आया और फिर एक दूसरे को दीवाना बना दिया था। किसी और तरह से नहीं, बस पुरानी बाते जो कभी खत्म होने का नाम ही नहीं लेती थी। लगता था ,ये दिन -रात यही ठहर जाये, हमेशा के लिये लेकिन इश्क कभी छुपाये छुपता है क्या? धीरे धीरे ये बात जमाने भर में फैल गयी लेकिन हम दोनों अपने फैसले पर अडिग रमा के पति ने बहुत विरोध किया ,पर मेरी पत्नी ने कहा कि आज तक आपने कभी अपने अतीत के बारे में नहीं बताया और शायद आप के प्यार में इसकी जरूरत भी नहीं पड़ी। लेकिन आज सब कुछ होते हुए भी आपके भीतर एक खालीपन क्या मेरा फर्ज नहीं बनता कि आपने मुझे जीवन भर सुख दिया ,और मैं केवल अपने स्वार्थ के लिये उम्र के इस ढलान पर आप को इतना सा भी सुख न दे सकूं तो मेरा पत्नी होना बेकार है। मैं रमा दी को सहर्ष स्वीकार करती हूँ। रिश्ता. आप जो चाहे समझे। बेटे बहू सब माँ के साथ, मैं और रमा अपने स्वार्थ के कारण खामोश। ये क्या कह रही हो ,आशा ? तुम नहीं समझोगे कभी इस पीड़ा को विकास एक दिन रमा अचानक आशा से मिलने उसके घर आई और बोली ,'दीदी आप बहुत अच्छी है, और मुझे मालुम है मेरी वजह से आप के सुखी जीवन में तूफान आ गया है।' लेकिन ये मेरी ही जिद थी कि, जो गुनाह हमने किया नहीं, उसकी सजा हम क्यों पाये ? विकास ने मना भी किया कि, ये सब इस उम्र में अच्छा नहीं लगता ,तो मैंने कहा कि ऐसा क्या चाहिए हमे? एक दूसरे से जो चाहिए ,वो सब हम दोनों भोग चुके है ।बस तुम्हारा साथ चाहिए विकास ने कहा भी ये सब समाज नहीं मानेगा ,पर मैंने कहा किश तुम्हारा और मेरा परिवार तो स्वीकार कर लेगा विकास ने कहा -नहीं ये सम्भव नहीं है, लेकिन पता नहीं ,रमा ने क्या सोच रखा था ,उसने कहा कि स्वीकार कर लेगा और आशा के पास कोई जवाब नहीं था ,केवल टप टप आंसू के सिवा। रमा ने कहा कि दीदी !मेरा केंसर लास्ट स्टेज पर है ,मैं कुछ दिनों की मेहमान हूँ ,या यूँ कहूँ कि कुछ घंटो की मेहमान। आशा कुछ नहीं बोली और रमा वहाँ से बिना उत्तर की प्रतीक्षा के चली आई आशा बहुत परेशान थी, कि क्या करे? बहुत कोशिश के बाद उसे लगा कि मरने वाले की आखिरी इच्छा तो कानून भी पूरी करने की कोशिश करता है ,फिर मैं तो इंसान हूँ ।मैं भी प्यार के मायने जानती हूँ ।सोचना आसान था ,पर इसे पूरा कैसे करे? एक दिन हिम्मत कर के श आशाश रमा के पति से मिलने गयी और कुछ समझ में नहीं आया कि बात कहाँ से शुरू करे? आखिर आशा ने ही बोलना शुरू किया कि आप अपनी पत्नी को समझा नहीं सकते ? राजेश ने कहा कि,आप क्या समझते है ,मैं बहुत कोशिश कर रहा हूँ, और आप निश्चिन्त रहे सब ठीक हो जायेगा ।यदि नहीं माने तो मैं वापस अमेरिका चला जाउंगा आशा ने कहा कि आप को पता है श्रमा जी श्को केंसर है ,हाँ, पता है ,तभी तो डाक्टर ने कहा कि इन्हें जरा इस माहौल से दूर ले जाये। शायद ये ठीक हो जाये।ये सब आप को किसने बताया ?राजेश ने कहा कि रमा ने और उसके डाक्टर ने श्आशाश ने फिर वो सारी बात बताई ,जो श्रमाश ने उसको बताई थी। फिर एक लम्बी खामोशी और उसके बाद आशा और राजेश का फैसला कि मरने वाले की आखिरी ख्वाइश पूरी करना पुण्य का काम है ,लेकिन इसका पता रमा और विकास को नहीं पड़ना चाहिये और फिर अचानक एक हवा का झोका आया और रमा मेरी बांहों में झूल गयी। हम सब होस्पिटल लेकर गये डाक्टरों के अथक प्रयास के बाद भी अतीत नहीं बच पाया !और एक ब्याता प्रेमिका सदैव के लिये अतीत बन गयी

विजय मिश्र दानिश
जयपुर, राजस्थान

जब से तुमको देखा है तस्वीर में!
तब से तुमको गिनता हूँ मैं हीर में!!

कैसे तुमसे प्यार जताऊँ मैं भला!
रब जानें तुम हो किसके तकदीर में!!

चाह बहुत होती है तुमसे कहने की!
तुम्हें जकड़ लूं चाहत की जंजीर में!!

कौन बचेगा इन नैनों के तीर से!
बड़ा असर है इन नैनों के तीर में!!

'तुम ही तुम ही तुम हो मेरी प्रीत में!
'तुम ही तुम ही तुम हो मेरी पीर में!!

जबसे तुमको देखा है..................
आलोक प्रेमी
भदरिया, अमरपुर

जरूरी है प्रेम

ना ..ना..ना
सिर्फ हवा,पानी और
रोटी ही जरूरी नहीं है
जिन्दगी के लिए ।
जरूरी है प्रेम भी
उसके न होने पर
कोई मर तो नहीं जाता।
पर वो अगर ना हो तो
कोई जी भी नहीं पाता।।
यकीन मानना
जब नहीं होता है
जिन्दगी में प्रेम
तो भूल जाते हैं सपने
रास्ता
आपकी नींदों तक पहुंचने का।।
सच मानिए
नहीं होता जब प्रेम तो
नहीं होती हैं
किसी रेस्टोरेंट में
कोई चाय, कोई क,फी
ठंडी
किसी लरजते कांपते से
इंतजार में।।
नहीं होता है प्रेम तो
भूल जाते हैं
वे सफेद खरगोश भी
सरगोशियां करना
मौसमों के कानों में ।।
सच कहूं तो
जब नहीं होता है ,
जिन्दगी में प्रेम
तो अन्दर बहुत कुछ मर जाता है
और इस बहुत कुछ का
कोई नाम भी नहीं होता।।

सो जिन्दगी में
गुंजाइश रखो
एक अदद प्रेम की
चाहे वह घर से हो ,
कुदरत से या
पशु पक्षियों से
या फिर किसी
औरत से मर्द से
करो ,प्रेम करो ,
जी भर कर करो
अगर सचमुच
जीना चाहते हो तो ।
मनुष्य बने रहना
चाहते हो तो ।

सुभाषचंदर,
नईदिल्ली

ग़ज़ल

काम कहता है निराला कर दिया।
बंद मुफ्लिस का निवाला कर दिया।।

वो फिरे कानून लेकर हाथ में।
मुल्क का जिसने दिवाला कर दिया।।

यह अँधेरों भी उसे खा जाएंगे।
कैद जिसने है उजाला कर दिया।।

अब हकीकत लिख कहाँ वो पाएगा।
कोरा कागज जिसने काला कर दिया।।

महल आलीशां बनाने के लिए।
ढेर मसजिद और शिवाला कर दिया।।

रंग भरकर चटपटा अखबार में।
हर खबर को ही मसाला कर दिया।।

चूमता "अंजुम" वही है अर्श को।
जिसने भी खुलकर उजाला कर दिया।।

प्यासा अंजुम जम्मू।

नाज़ुक है दिल

खुदा कसम झूठा प्यार मत करना
जुनून ए इश्क में हद पार न करना

देकर दिल मिलाकर नजर कोई
मुकाम पे पहुंच इनकार न करना

नाजुक है दिल मेरा टूट जाएगा
मन का भाव दबा हुआ रहजाएगा

मांगने में क्या लाज जो न दे सकेगा
बेरूख दिल को तार- तार मत करना

मांग लेना शौक से जान भी हमारी
पर कैमी के पीठ पर खंजर से वार
मत करना।

राज नारायण गुप्ता"कैमी"

चोट खाने

चोट खाने आई हूँ
मुझे कोई जख़्म दे दो
आज फेर मेरे दिल को
ऐक नया दर्द दे दो
यू तो हम कही रुकते नहीं,
बस तुम ही हो जहाँ से दिल
गुजरता नहीं
कुछ बात तो नही ऐसी तुममें,
कि तुम लुभा लो ।
खता तो मेरी नजरों की थी,
न जाने क्या देखा तुम मे
और कह दिया मुझे पटा लो ।
इश्क तुम्हारे बस का नहीं
और हम इश्क के बिना नहीं
न जाने क्या दिखा तुम में,
और मर मिटे हम यही!
मैं गुलाब सी कली रही,
तू खिला ऐक फूल था।
मैं टूट कर बिखर गई ,
और तू मशगुल था।

खुशबु कुमारी दिल्ली

न्योता

हमारे ब्रज में अनेक बातें ऐसी हैं जो ना चाहते हुए भी हास्य का कारण बन ही जाती हैं उन्हीं में से एक है न्योता (निमंत्रण) वह भी खाने का , लेकिन हमारे मुरली पंडित जी ऐसे हैं कि जिनको तो मजबूरन सभी को न्योता देना ही पड़ता है ! पंडित जी जो ठहरे शादी ब्याह में नामकरण में श्राद्ध में बारहवीं में तेरहवीं चाहे जो आयोजन हो मूंछों को बड़ी पैनी और चोटी को संवार कर के जाते हैं ।लेकिन जब कोई अवसर अपने घर में न्योता देने का आता है तो पंडित जी की सांसें फूलने लगती हैं और दूसरों की बजाय स्वयं का हाजमा बिगड़ने लगता है। उनके सभी यजमानो और परिचितों सहित मित्रों को भी पता रहता है कि पंडित जी के न्योते से कभी किसी का पेट तो दूर मुंह भी भर जाए तो गनीमत समझना, ज्यादा से ज्यादा चरणामृत पिलाकर आपको ससम्मान विदा कर देंगे , परंतु भोजन ! अजी भजन का नाम लो भजन का।

एक बार ऐसे ही पंडित जी के बारह वर्षीय बेटे का अवतरण दिवस आया, अब जब वह बेटा अपने सभी मित्रों के यहां जाता है तो सभी मित्रों को भी तो न्योता देना ही पड़ेगा सो पुत्र ने अब की बार पंडिताइन से कहलवाकर अपने अवतरण दिवस पर एक सुंदर सा आयोजन रखा है और वह भी पूरी तरह भारतीय संस्कृति के अनुरूप और पुत्र ने पिता से अपने मित्रों को न्योता देने जाने की आज्ञा मांगी तो पिता ने तुरंत यह कहकर स्वयं जाने की इच्छा जाहिर की कि -पुत्र की खुशी में पिता को ही सारी व्यवस्था और जिम्मेदारी संभालनी चाहिए अतः तुम घर पर रहो हम न्योत कर आएंगे।मित्र परिवार को न्योतने का जो पंडित जी का तरीका था वह बड़ा ही विचित्र था। श्री श्री आदरणीय यजमान जी वह क्या है कि कल हमारे पुत्र का अवतरण दिवस है तो आप हमारे निज निवास पर सादर आमंत्रित हैं सपरिवार आइएगा और सुनिए जजमान ! ''अपने घर खईंयों मत बिना बुलाए अईंयों मत'' , हं हंहेंहें हम सुबह बुलावा भेज देंगे ।

सभी मित्र जजमानों ने सोचा कि चलो अबकी बार पंडित जी ने पुत्र की खुशी में प्रसाद के भंडार खोल दिये । दूसरे दिन सभी मित्र परिवार काफी देर प्रतिक्षा करने के पश्चात पंडित जी के द्वार पर पहुंच गए उन्हें देखकर पंडित जी खिसियानी हंसी से उनका स्वागत किया हैं हैं हैं अरे ! जजमान आप सभी आ गए! पधारिए पधारिए। वह हंसकर बोले 'आप आ ही गए ! लेकिन हमने तो न्योता देते समय कुछ और भी कहा था !! शायद आप समझ नहीं पाए , अब आ ही गए हैं तो बिराजें और तनिक हमारे अर्थ को समझने की चेष्टा कीजिएगा ।

यहां सारे अतिथियों को सुबह से दोपहर तो वैसे ही हो गई थी पुत्र के मित्रगण भी बार-बार जल का आग्रह करते कि चलो उन्हें कुछ समझ आ जाए पर उन्होंने भी अपने न्योते का अर्थ सभी को कैसे समझाना है सोच लिया था। सो हर किसी के जल आग्रह पर बड़े आदर और सम्मान पूर्वक जल ला लाकर दे रहे थे अब ज्यों ही शाम हुई तो सभी के सब्र का बांध टूट गया जितने भी अतिथियों के पेट में चूहे , बिल्ली ,शेर , भालू लड़ रहे थे। वह इन सभी को साथ में लेकर हमला बोल ही दिया अरे पंडित जी सवेरे से प्रवचन सुनकर और पानी पीकर अब तो पेट में इतनी कीचड़ हो गई है कि अब तो फिसलने का बड़ा ही खतरा है,कोई व्यवस्था क्यों नहीं करते?

पंडित जी की लोभी और चतुर बुद्धि ने ऐसा जवाब दिया कि सभी अतिथियों के पेट की आंतों ने जीवन भर के लिए ऐसे पंडित जी के घर का आतिथ्य स्वीकारने में कानूनी स्टे लगा दिए । हें हें तो जजमान सूखे में होकर अविलंब प्रस्थान कीजिए , अरे हां ! आप सभी ने बड़ी एकाग्रता से तन्मय होकर प्रभु का प्रवचन सुना जरा चरणामृत तो लेकर ही जाइए । आप सभी का कल्याण हो ।सभी मित्र परिवार हाथों में चरणामृत लेकर रुंवासी प्रसन्नता से बोले पंडित जी एक प्रश्न है यदि उत्तर मिल जाए तो हम धन्य हो जाएं ।

' यजमान पूछिए ना '

जरा हमें अपने न्योता देने का अर्थ समझा दीजिए और आपके पुत्र के अवतरण दिवस पर आयोजन का प्रयोजन बतला दीजिए पंडित जी बस । अरे जजमान हमें भला क्या प्रयोजन? हमें तो स्वयं आप लोग ही पुण्य के भागीदार बनकर अपने पुण्य से धन- धान्य कर देते हैं सो बस। और रही बात उत्तर की तो उसी उत्तर में यजमान आपका उत्तर है समझने की थोड़ी आपकी भूल है। कथन था

'अपने घर खईयों मत,बिना बुलाए अईयों मत'

सभी मित्र परिवारों का सिर चकरा गया और पंडित जी की बुद्धि चतुराई को साक्षात दंडवत प्रणाम करके निज निवास के लिए प्रस्थान कर चले।

संतोष शर्मा शान
हाथरस